शिव आमंत्रण
आध्यात्म की नई उड़ान
सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

11
खुद को जाने बिना परमात्मा को नहीं जान सकते...

07
15 कुमारी बनीं ब्रह्माकुमारी, शिव को साजन के रूप में स्वीकारा

वर्ष ▸ 09 | अंक ▸ 09 | हिन्दी (मासिक) | सितंबर ▸ 2022 | पृष्ठ ▸ 16 मूल्य ▸ ₹ 12.50

आध्यात्म ▸ राष्ट्रपति का आध्यात्म और राजयोग ध्यान के प्रति है विशेष लगाव, ब्रह्ममुहूर्त 3.30 बजे से करती हैं ध्यान

शिवबाबा की महिमा से महामहिम

2009 में ब्रह्माकुमारीज के रायरंगपुर सेवाकेंद्र की बहनों से सीखा राजयोग मेडिटेशन

- बहनों के साथ गांव-गांव जाकर लोगों को दिया परमात्म संदेश
- बिना प्याज-लहसुन का शुद्ध सात्विक भोजन ही स्वीकार करतीं हैं
- ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग मेडिटेशन सीखने के बाद जीवन में आया नया मोड़

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। देश को मुर्मू के रूप में पहली महिला जनजातीय समुदाय से ताल्लुक रखने वाली महामहिम मिली हैं। लेकिन इस बार के राष्ट्रपति चुनाव ने फिर एक बार देश-दुनिया में आध्यात्म और शांति की अलख जगाई है। साथ ही ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान को फिर से खबरों में ला दिया। इसकी वजह है मुर्मू का शिव बाबा कनेक्शन। जिसकी चर्चा देश ही नहीं दुनिया में हो रही है। मुर्मू का कहना है वह जो भी हैं बाबा की वजह से ही हैं। जीवन में आध्यात्म की राह अपनाने के बाद उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली। इससे दस साल पहले जब प्रतिभा पाटिल राजस्थान की राज्यपाल रहते देश की राष्ट्रपति की उम्मीदवार चुनी गईं थीं तो उन्होंने भी शिव बाबा के आशीर्वाद से राष्ट्रपति बनने का दावा किया था। ये घटनाएं बतातीं हैं कि अब शिव बाबा के प्रत्यक्षता का समय नजदीक आ गया है।

आइए जानते हैं ब्रह्माकुमारीज़ का राजयोग मेडिटेशन सीखने के बाद देश की महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की जिंदगी और विचारधारा में क्या परिवर्तन आए। कैसे उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी खुद को संभाले रखा और आज देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद राष्ट्रपति तक पहुंचीं, एक रिपोर्ट....

राष्ट्रपति रोजाना पढ़ती हैं मुरली

राष्ट्रपति मुर्मू आज भी रोजाना मुरली पढ़ती हैं। दरअसल, ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े सभी सदस्य अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए रोजाना परमात्म महावाक्य (जिसे सभी ज्ञान 'मुरली' कहते हैं) पढ़ते और सुनते हैं। संस्थान के सभी सेवाकेंद्र पर एक साथ, एक ही समय पर सुबह 7 बजे से मुरली क्लास शुरू होती है। इसमें परमात्मा जो शिक्षाएं, सावधानियां और मार्गदर्शन देते हैं उसे प्रैक्टिकल जीवन में धारण करने का अभ्यास करते हैं।

संस्थान से जुड़ने के बाद लोगों के जीवन में परिवर्तन का यह मुख्य आधार भी है। एक इंटरव्यू में मुर्मू ने कहा था कि राज्यपाल बनने के बाद प्रोटोकाल के चलते अब रोजाना ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर जाना नहीं हो पाता है। इसलिए घर पर ही रोज मुरली पढ़ती और सुनती हूं।

आज जो कुछ बोल पाती हूं उसके पीछे आध्यात्मिक बल ही है...

राष्ट्रपति मुर्मू की दिनचर्या आज भी ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे से शुरू हो जाती है। सबसे पहले वह ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमपिता शिव परमात्मा का ध्यान करती हैं, जिन्हें सभी प्यार से शिव बाबा कहते हैं। शिवलिंग के आकार की लाल लाइट के बिंदु पर वह अपना ध्यान लगाती हैं। राजयोग मेडिटेशन ध्यान की वह अवस्था है जिसमें हम खुद को आत्मा समझकर परमपिता परमात्मा को याद करते हैं। परमात्मा के जो गुण और शक्तियां हैं, उनका मन ही मन बुद्धि द्वारा विजुलाइज करके खुद को उनके स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास किया जाता है। राजयोग अंतर्जगत की यात्रा है, जिसमें हम स्व चिंतन और परमात्म चिंतन करते हैं। वह शाम 6.30 बजे से 7.30 बजे तक भी यथासंभव राजयोग ध्यान करती हैं। झारखंड की राज्यपाल रहते हुए मुर्मू ने एक इंटरव्यू में कहा था कि आज मैं जो कुछ बोल पाती हूं वह आध्यात्मिक बल के कारण ही बोल पाती हूं। यह शक्ति परमात्मा ही देते हैं।

यहां आने से मुझे जीने की वजह मिल गई

एक बार मुर्मू ने कहा था कि वह जब भी ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा निमंत्रण दिया जाता है तो खुशी-खुशी उनकी बातें सुनने के लिए आती हूं। उनके साथ कुछ पल बिताने के लिए मैं मौका ढूंढती हूं। यहां आकर आत्मा को शांति मिलती है। बहनों के संपर्क में आने से शक्ति मिलती है, ताकत मिलती है। यहां आने से पॉवरफुल वाइब्रेशन मिलते हैं। जिंदगी का सफर चलते-चलते जब मैं थक गई और ब्रह्माकुमारी बहनों के संपर्क में आई तो एक नई ऊर्जा, जिंदगी जीने की नई वजह मिल गई।

साक्षात् ज्ञान गंगाएं हैं ब्रह्माकुमारियां

ब्रह्माकुमारी बहनें साक्षात् ज्ञान गंगाएं हैं। ये रोज ज्ञान की डुबकी लगाती हैं और हमें भी लगवाती हैं। जो बहनें 50 साल, 80 साल से ज्ञान की डुबकी लगा रहीं हैं सोचने की बात है कि उनका मन कितना पवित्र होगा। जैसे सूर्य चमकता है और अपनी रोशनी से चारों ओर प्रकाश बिखेरता है, वैसे ही ये बहनें अपने ज्ञान का प्रकाश बिखेरकर हमारे जीवन में नई रोशनी जगाती हैं। ये बहनें भगवान के बच्चे पूरे विश्व को ज्ञान रोशनी दे रही हैं।

शेष पृष्ठ 2 पर ▸

सर्विस में त्रिकालदर्शीपन का सेन्स, रूहानियत का इसेन्स भरना है

राष्ट्रपति की आध्यात्म यात्रा राष्ट्रपति पद के लिए सफेद साड़ी में पहुंचीं फॉर्म भरने, लोगों में रहा चर्चा का विषय...

विष को निकाल अमृत धारण करा रहीं बहनें: राष्ट्रपति

मुर्मू को श्रेष्ठ कार्य पर मिला था बेस्ट एमएलए का अवार्ड

एक कार्यक्रम में राज्यपाल रहते मुर्मू ने कहा था कि परमात्मा सतचित आनंद स्वरूप है। लेकिन आज हम अपने स्वरूप भूलने से देखते हैं सबका चेहरा लटका हुआ है। निराश होकर बैठे हैं। ब्रह्माकुमारी बहनें सिखाती हैं कि कैसे हम शांति, सुख और आनंद से रहें। हमारे अंदर जो अमृत है उसका मंथन करना है और मंथन करके हमारे अंदर जो विष है उसे फेंककर अमृत को धारण करना है। जब सभी अमृत को धारण करेंगे तो जल्द ही इस दुनिया में स्वर्णिम युग आएगा। जब तक हम अपने अंदर की बुराइयों को खत्म नहीं करेंगे जीवन में आनंद नहीं आएगा। ये बहनें अपने घरबार छोड़कर विश्व शांति के लिए जो कार्य कर रही हैं वास्तव में यही मानव जीवन का लक्ष्य है।

मन-वचन-कर्म में हो सामंजस्य

उन्होंने कहा कि हम देखते हैं कि देवताओं के चेहरे हमें मुस्कुराते हुए दिखते हैं हमें भी सदा ऐसे ही रहना है। सदा मुस्कुराते रहें। अपनेआप को पहचानें, आप वही हो भगवान के बच्चे। जो क्वालिटी, विशेषताएं, गुण भगवान की हैं, वही हमारी भी हैं, जरूरत है तो उन्हें पहचानने की। मन-वचन-कर्म जब तीनों में सामंजस्य होगा, तीनों को सुधारेंगे तो हमारा जीवन दिव्य बन जाएगा। जैसे हम करते हैं, हमें देखकर दूसरे करते हैं। हम सुधर जाएंगे, दुनिया सुधर जाएगी। खुशी को हम बाहर ढूंढते हैं लेकिन खुशी हमारे अंदर है।

खुद को कभी कम न आंके

तत्कालीन राज्यपाल मुर्मू ने एक साक्षात्कार में बताया था कि मैंने बचपन से कभी खुद को कम नहीं आंका है। मेरा बेटियों के लिए संदेश है कि कभी खुद को कमजोर न समझें। खुद को कम न आंके। आपमें सबकुछ करने की क्षमता है। कमजोर व्यक्ति कभी जीवन में बड़े लक्ष्य हासिल नहीं कर सकता है। मजबूत, बहादुर और आत्म विश्वास से भरपूर व्यक्तित्व की ही सभी जगह सराहना होती है और मान-सम्मान मिलता है।

राजनीति में आने के लिए कभी नहीं सोचा

एक इंटरव्यू में मुर्मू ने कहा था कि मैंने कभी सोचा नहीं था कि मैं राजनीति में जाऊंगी। पहले मैंने सोचा था कि थोड़ी-बहुत पढ़-लिख लूं और जीवन चल जाएगा। इसके लिए मैं पहले शिक्षिका बनी। फिर मैंने समाजसेवा शुरू की। समाज से लोगों ने ही आगे आकर मुझे राजनीति में आने के लिए कहा और मैं सभी के सहयोग से विधायक बन गई। फिर मुझे किसी खास प्रयास के मंत्री बना दिया। इस दौरान मैंने दिल से लोगों की भलाई के लिए कार्य किए और मुझे बेस्ट एमएलए का अवार्ड भी मिला। सफेद रंग पवित्रता और शांति का प्रतीक होता है। चूंकि मुर्मू पिछले 13 साल से ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा सिखाई जा रहीं नियम-मर्यादाओं का भी पालन करती हैं। इसलिए जब वह राष्ट्रपति पद के लिए फॉर्म जमा करने पहुंचीं तो सफेद साड़ी पहने हुए थीं जो सभी के बीच चर्चा का विषय रहा।

आत्मा का भोजन है आध्यात्मिकता

कई संस्थाएं विश्व कल्याण के लिए कार्य कर रही हैं, लेकिन अगर ब्रह्माकुमारीज़ की बात करें तो यह विश्व की पहली ऐसी संस्था है जो महिलाओं द्वारा संचालित होती है और यहां राजयोग सिखाया जाता है। योग के बारे में हर कोई जानता है लेकिन राजयोग मेडिटेशन एक ऐसा योग है जो न सिर्फ आपकी एकाग्रता शक्ति को बढ़ाता है बल्कि आपको जीवन की हर परिस्थिति से शांत मन से लड़ना सिखाता है। खुद पर नियंत्रण करना सिखाता है। अपनी कर्मेंद्रियों पर जीत हासिल करना सिखाता है। आत्मा के अंदर शक्ति प्रदान करता है। यह योग अभ्यास नहीं है, बल्कि जीवन जीने की एक कला है। आज हर किसी को अपने जीवन में इस मेडिटेशन की जरूरत है।

स्प्रीचुअल इम्युनिटी...

जैसे लोगों को फिजिकल इम्यूनिटी स्ट्रॉन्ग करने की जरूरत है। ठीक वैसे ही स्प्रीचुअल इम्युनिटी को भी ताकतवर बनाने की जरूरत है। आध्यात्मिकता आत्मा का भोजन है। जब तक आत्मा को भोजन नहीं मिलेगा उसे दुनिया से लड़ने की ताकत कहां से मिलेगी। ये संस्था एजुकेशनल गुड्स देती है। हर इंसान को इसकी आवश्यकता है। अगर हम बचपन से ही इन शिक्षाओं को जीवन में धारण करते हैं तो आगे चलकर जीवन की कई राहें आसान हो जाती हैं।

आध्यात्म से आती है चुनौतियों का सामना करने की शक्ति

विश्व में आज सबसे ज्यादा जिस चीज की आवश्यकता है वो है शांति और सौहार्द्र। बच्चे से लेकर बूढ़े तक हर कोई अंदर से अशांत है। भागदौड़ भरी इस जिंदगी में लोगों के पास अपने लिए वक्त ही नहीं है कि वो शांति से बैठकर अपने अंदर झांके और खुद से बातें करें। इसलिए मानसिक रूप से हर कोई परेशान है और तनाव ग्रस्त भी है। आध्यात्मिकता आपको हर परिस्थिति से लड़ने की ताकत देती है, क्योंकि जब इंसान खुद के अंदर झांकता है तो उसे हर उस शक्ति का एहसास होता है जो उसके पास है लेकिन वो भूल गया है। आध्यात्मकिता एकाग्र शक्ति को इतना बढ़ा देती है कि इंसान किसी भी परिस्थिति से हंसकर मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाता है। उसका अपनी भावनाओं पर इतना कंट्रोल होता कि वो सही समय पर धैर्य रखकर फैसले ले पाता है। आध्यात्मकिता आत्मा की ज्योति को जगा देती है, जिसकी वजह से आप सही और गलत की पहचान कर पाते हैं। आपके अंदर चल रहे निगेटिव थॉट भी पॉजिटिव में बदल जाते हैं। आप अपने अंदर एक ऊर्जा महसूस करते हैं और दूसरों को भी वही प्रकाश देने की कोशिश करते हैं।

आध्यात्मिकता क्या है?

आज हर किसी को आध्यात्मिकता की शिक्षा लेने की जरूरत है। आध्यात्मिकता किसी धर्म या जाति को डिफाइन नहीं करती है। आध्यात्मिकता मतलब आंतरिक जगत की एक यात्रा। यह एक ऐसा सफर है जो आपको खुद से मिलने का मौका देता है। अपना और परमात्मा का परिचय करवाता है। आध्यात्मिकता जीवन जीने की कला सिखाती है। हर इंसान अंदर से आध्यात्मिक होता है, बस जरूरत होती है तो उस स्वरूप को पहचानने की। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय यही कार्य पिछले 86 वर्ष से करता आ रहा है। इस विश्व विद्यालय ने लाखों लोगों को आध्यात्मिकता का पाठ पढ़ाया है और जीवन को नई दिशा दी है। नव निर्वाचित राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाओं से उनके जीवन में अद्भुत परिवर्तन आए हैं। आध्यात्मिकता ने कैसे उनका जीवन बदला इस बारे में उन्होंने कई बार सार्वजनिक मंच से विस्तार से अपना अनुभव सुनाया है।

क्या है ब्रह्माकुमारीज़

साल 1937 में स्थापित हुए इस विश्व विद्यालय के आज लगभग पांच हजार सेवाकेंद्र हैं। करीब 140 देशों में इसकी शाखा खुल गई हैं। यह स्वयं में विश्व परिवर्तन का एक मुख्य संकेत है कि यह संदेश आज घर-घर में अनेक माध्यम से पहुंच रहा है। इस संस्था को चलाने के पीछे आत्मिक शक्ति कार्य करती है जो परमात्मा से योग लगाने से मिलती है। अगर हम अपने भीतर की शक्तियों को पहचान लें तो जीवन की सारी परेशानियां आसान हो जाएंगी।

पृष्ठ 1 का शेष ➤

शिवबाबा की महिमा से महामहिम

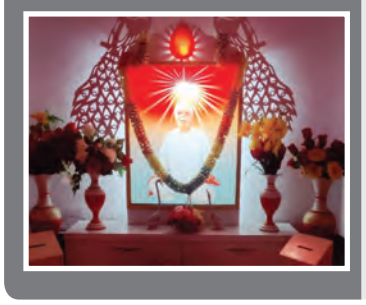

2009 में जीवन में आया भूकंप

जीवन के कठिन संघर्ष को याद करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के पीस ऑफ माइंड चैनल को दिए साक्षात्कार उन्होंने बताया कि बचपन से ही लोगों की भलाई और समाजसेवा करने के बाद भी वर्ष 2009 में मेरे जीवन में भूकंप आ गया। मेरा 25 वर्षीय बड़ा बेटा दुनिया छोड़कर चला गया। इस घटना ने मुझे अंदर से झकझोर दिया। दो महीने के लिए डिप्रेशन में चली गई। लेकिन मेरे अंदर से आया कि मुझे लोगों के लिए जीना है, फिर मैंने ब्रह्माकुमारी संस्था से संपर्क किया। यहां सात दिन का राजयोग मेडिटेशन का कोर्स करने के बाद मेरे जीवन में अद्भुत परिवर्तन आया। जैसे-जैसे राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास बढ़ता गया तो मेरा दुख कम होता गया।

2013 में जिंदगी में आया फिर से भूचाल

इस घटना से उबरी ही थी कि फिर 2 जनवरी 2013 में जिंदगी ने दोबारा परीक्षा ली। दूसरे बेटे ने सड़क दुर्घटना में शरीर छोड़ दिया। चूंकि मैं पहले से मेडिटेशन कर रही थी तो इस बार कुछ कम धक्का लगा। ब्रह्माकुमारी बहनों ने मेरी काउंसलिंग की तो धीरे-धीरे यह दुख सहन करने की भी शक्ति आ गई। दो बेटों की मौत के बाद मेरे पति भी डिप्रेशन में चले गए। फिर मेरा छोटा भाई, मेरी माताजी भी चली गईं। एक महीने के अंदर मेरे परिवार में तीन लोगों ने शरीर छोड़ दिया। लेकिन राजयोग ध्यान और परमात्मा की शक्ति ने मुझे संभाले रखा। परमात्मा की शक्ति से मैं आगे बढ़ती रही। वर्ष 2014 में मेरे पति ने भी शरीर छोड़ दिया।

गांव-गांव दिया राजयोग का संदेश

वर्ष 2009 में ईश्वरीय ज्ञान मिलने के बाद मैंने ब्रह्माकुमारी बहनों के साथ गांव-गांव घूमकर लोगों को राजयोग मेडिटेशन और परमात्मा का संदेश दिया। बाद में मैंने बहनों को सेंटर खोलने के लिए अपना घर भी दे दिया और छोटे भाई को अपने पास बुला लिया।

राज्यपाल के लिए मैंने अप्लाई तक नहीं किया था

2015 में जब झारखंड के राज्यपाल का चयन होना था तो लोगों ने कहा कि आपका नाम राज्यपाल बनाने के लिए चल रहा है। तब तक मुझे पता भी नहीं था और न ही मैंने राज्यपाल के लिए आवेदन किया था। परमात्मा के आशीर्वाद से सब बिना मांगे ही मिलता गया।

राजयोग मेडिटेशन से मैंने अपने भय पर विजय पाई

- हरि मिर्च, लाल मिर्च में लीड रोल करने वाले एक्टर अभिनन्दन का परिवर्तनकारी अनुभव

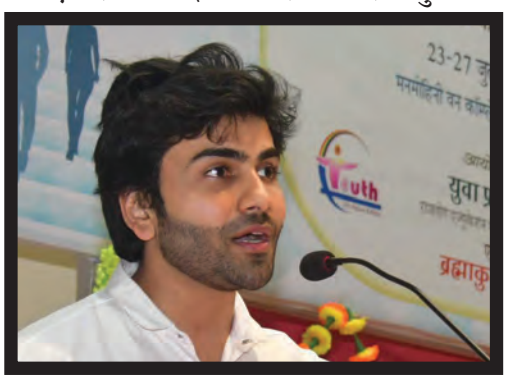

शिव आमंत्रण, आबू रोड। असली हीरो तो ब्रह्माकुमार भाई-बहनें हैं। आप लोगों को देखने में लगता है कि हम लोग हीरो हैं लेकिन वास्तविक जिंदगी में आप लोग हीरो हैं। समाज के नायक हैं। समाज को राह दिखाने वाले हैं। जब मैं ऑडिशन देने जाता था तो मुझे रिजेक्ट कर दिया जाता था जबकि मेरे वही ऑडिशन दूसरों को दिखाए जाते थे कि आपको ऐसे एक्टिंग करना है और मेरा सिलेक्शन नहीं होता था। मैं जब संघर्ष करते-करते थक गया और निराश हो गया था तो ऐसे में ब्रह्माकुमारी दीदियों ने मुझे प्रेरणा देकर मुझे आगे बढ़ने के लिए नई राह दिखाई। राजयोग मेडिटेशन सीखा, इससे असफलता का भय नहीं सताता था वहीं जीवन को देखने का दृष्टिकोण बदल गया। हर पल सिर्फ और सिर्फ सकारात्मक और श्रेष्ठ चिंतन ही चलता। मैंने अपने भय पर, चिंताओं और दुःख पर जीत पाना सीख लिया। ब्रह्माकुमारीज़ में हमें सोचने की सही कला सिखाई जाती है। मेरी मां कई वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ की विद्यार्थी हैं। वह अमृतवेला 4 बजे से मेडिटेशन करती हैं और नियमित मुरली क्लास भी करती हैं।

मुझे राजयोग से मिलती है सकारात्मक ऊर्जा

- शांतिवन पहुंचे ओ माई गॉड फिल्म सहित कई सुपरहिट फिल्मों का निर्देशन करने वाले डायरेक्टर उमेश शुक्ला

शिव आमंत्रण, आबू रोड। अब ऐसी फिल्मों की जरूरत है जिससे लोगों में एक आध्यात्मिक चेतना आए। लोगों को लगे कि इससे हमारे जीवन में एक आशा की किरण दिख रही है। परिवार के साथ लोग बैठकर देख सकें। मौजूदा समय में सकारात्मक और पारिवारिक फिल्मों की अति आवश्यकता है। यह गलत है कि गलत फिल्में लोगों की डिमांड हैं। अच्छी और पारिवारिक फिल्में भी लोगों ने खूब पसंद किया है। इसलिए इस पर फोकस करने की जरूरत है। वर्तमान समय फिल्म इंडस्ट्री को राजयोग ध्यान की जरूरत है, क्योंकि इससे आंतरिक शक्ति का विकास तो होता ही है, साथ ही आध्यात्मिक शक्ति बढ़ती है। सामाजिक प्रक्रिया को एकसूत्र में बांधकर रखने की ताकत मिलती है। अब तो देश के सर्वोच्च पद पर बैठने वालीं महामहिम द्रौपदी मुर्मू जी भी इससे जुड़ी हुई हैं। मैं खुद ही राजयोग ध्यान का अभ्यास करता हूं। इससे मुझे सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। काम पर बेहतर फोकस कर पाता हूं। जब हमने 102 नॉट आउट बनाया था तब हमने दादी जानकी जी का चित्र लगाया था। (आपने ओ माई गॉड, 102 नॉट आउट, ढूंढते रह जाओगे, गोपाला गोपाला, ऑल इज वेल, ए जर्नी फार कामनमैन, आंख मिचौली के डायरेक्टर और खिलाड़ियों के खिलाड़ी में आप एक्टर भी हैं।)

राजयोग के प्रयोग

परमात्मा शिव बाबा की मदद से ऑपरेशन गंगा को चलाने में सफल रही: डॉ. हरप्रीत सिंह

- एयर इंडिया की कार्यकारी निदेशक और डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अवार्ड प्राप्त डॉ. हरप्रीत सिंह ने बताया अपना राजयोग मेडिटेशन से जुड़ा अनुभव...

शिव आमंत्रण, आबू रोड। जो लोग आपको दुःख पहुंचाते हैं उन्हें भी दया और करुणा के वाइब्रेशन देकर देखें बहुत ही सुकून मिलेगा। मुझे बचपन से ही घर में अच्छे संस्कार मिले लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा सिखाए जाने वाले राजयोग मेडिटेशन को सीखने के बाद मेरे सोचने के नजरिए में अद्भुत बदलाव आया है। अब हर बात में पॉजीटिव एंगल देखती हूं। मेरे स्टाफ में छोटे कर्मचारी से लेकर ऑफिसर के साथ एक समान प्रेमपूर्ण व्यवहार करती हूं। यहां के ज्ञान से मैंने जाना कि जीवन में दया और करुणा का कितना महत्व है। यदि आप परमात्मा का ध्यान करेंगे, राजयोग ध्यान सीखेंगे, ध्यान करेंगे तो आप बिल्कुल बदल जाएंगे। मैं सुबह 4 बजे उठकर सबसे पहले परमात्मा को गुड मार्निंग करके राजयोग ध्यान करती हूं। ध्यान में जब आप खुद को संकल्प देंगे कि मैं एक प्योर आत्मा हूं। मैं पॉवरफुल आत्मा हूं। मैं पीसफुल आत्मा हूं। मैं लकी आत्मा हूं... तो वास्तव में हमारे साथ भी वैसा ही होने लगता है। इसका प्रैक्टिकल में मैंने जीवन में अनुभव किया है। परमात्मा कहते हैं कि हिम्मते बच्चे, मददे बाप। आप हिम्मत का एक कदम बढ़ाओ मैं हजार कदम बढ़ाऊंगा। यहां आपको धर्म, जाति बदलने की जरूरत नहीं है।

जब बच्चे यूक्रेन से पहुंचे तो आंखें हो गईं थीं नम...

डॉ. हरप्रीत सिंह ने यूक्रेन में फंसे भारतीयों का वापस लाने के लिए चार माह पहले भारत सरकार द्वारा चलाए गए ऑपरेशन गंगा को ऑपरेट करने का अनुभव बताते हुए कहा कि जब मुझे पता चला कि यूक्रेन में फंसे बच्चों के लिए वापस लाना है तो सबसे पहले पायलट को मोटिवेट किया। परमात्मा को याद किया कि सभी बच्चे सुरक्षित पहुंच जाएं। जब यूक्रेन से बच्चे वापस भारत आए और जब वह एयरपोर्ट पर अपने माता-पिता से मिले तो उस क्षण को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है। उस दिन वास्तव में जीवन में सबसे ज्यादा खुशी मिली। मेरी आंखें नम हो गईं कि सैकड़ों बच्चों की जिंदगी बचाने का जिम्मा हमारे हाथों में आया। कोरोना काल के दौरान भी मैंने राजयोग की बदौलत खुद स्ट्रांग रही और अपने स्टाफ को मोटिवेट किया। उनका उमंग-उत्साह बढ़ाया।

मिस एशिया कॉन्टिनेंट मृणालिनी का आध्यात्म प्रेम

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ परिसर में अद्भुत शांति की अनुभूति होती है। ऐसा लगता है कि जैसे किसी नई दुनिया में आ गए हैं। यहां का मैनेजमेंट और व्यवस्थाएं सब देखने लायक हैं। आज सभी को स्प्रीचुअल नॉलेज लेना चाहिए। खासतौर पर यूथ के लिए। मेडिटेशन की प्रैक्टिस से माइंड में पॉजीटिव एनर्जी बढ़ती है। ब्रह्माकुमार भाई-बहनों से से अपनेपन का एहसास हुआ। यहां की दिव्यता महसूस करने लायक है।

राजयोग ध्यान के प्रयोग से अवसाद से निकला बाहर

- डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन के असिस्टेंट डायरेक्टर मनोज कुमार गोयल ने बताया अपना अनुभव-

शिव आमंत्रण, आबू रोड। कुछ समय पहले मैं अवसाद में चला गया था। दूर-दूर तक कहीं जीवन में उजेला दिखाई नहीं दे रहा था। एक दिन ब्रह्माकुमारीज़ संस्था और राजयोग मेडिटेशन के बारे में पता चला। मैंने पांच साल पहले सेवाकेंद्र पर जाकर राजयोग कोर्स किया। इससे मुझे प्रेरणा मिली और धीरे-धीरे अवसाद से बाहर आ गया। जैसे-जैसे राजयोग की गहराइयों को जानता गया, अभ्यास बढ़ता गया तो जीवन में बहार आ गई। आध्यात्मिक ज्ञान से जीवन के दुःखद और कड़वे अनुभवों से निकल गया। ऐसा लगने लगा कि मुझे नया जीवन मिल गया है। मेरा मानना है कि किसी की ओर मुस्कुराकर देख लेना भी दया है। सबसे पहली दया हमें अपनेआप पर, खुद पर करनी है कि इस दुनिया में आएं हैं तो यह जानना जरूरी है कि हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है? हमारी वास्तविक पहचान क्या है? हमारे अंदर तमाम आंतरिक शक्तियां मौजूद हैं, जिन्हें जगाने की जरूरत है। राजयोग ज्ञान से जीवन जीने की कला आती है।

परमात्मा पर भरोसा, हो तो नामुमकिन भी मुमकिन हो जाता है: कैप्टन डॉ. किरण कुमारी

- जब मैंने इंडियन ऑर्मी ज्वॉइन की थी तो उस समय बेटियों को कम ही लिया जाता था

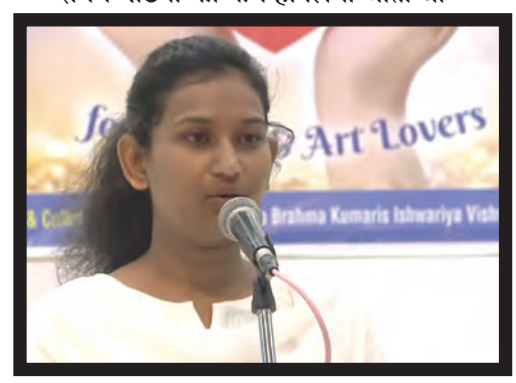

शिव आमंत्रण, आबू रोड। मेरा जन्म महाराष्ट्र के उस्मानाबाद में हुआ। मेरे जीवन का अनुभव है कि परमात्मा पिता पर अटल भरोसा, विश्वास हो तो जीवन में कुछ भी नामुमकिन नहीं है। जब आप मेहनत के साथ परमात्मा की दुआएं, उनका आशीर्वाद और मार्गदर्शन के साथ जीवन पथ पर आगे बढ़ते हैं तो असंभव काम होते चले जाते हैं। जीवन में ऐसी-ऐसी अप्रत्याशित घटनाएं होती जाती हैं कि हमें खुद पर भी विश्वास नहीं होता है। मैं पिछले 20 साल से राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कर रही हूं। रोजाना आध्यात्मिक ज्ञान का मनन, चिंतन और श्रवण करती हूं। इसका नतीजा है कि मैंने जीवन में जो सोचा है वह पाया है। मेरा ख्वाब था कि मैं इंडियन आर्मी ज्वॉइन करके देश की सेवा करुं। लेकिन उस समय आर्मी में बेटियों के लिए स्थायी कमीशन नहीं होने से कम ही लिया जाता था। लेकिन मेरे अटल निश्चय और परमात्मा पर विश्वास होने से जब मैंने अप्लाई किया तो मेरा सिलेक्शन हो गया। राजयोग के अभ्यास से मेरा मनोबल बढ़ा और जो सोचा वह पाया। मेरा आज युवाओं से आह्वान है कि आध्यात्म से जुड़े और मेडिटेशन को जीवन का हिस्सा बनाएं फिर आप जो चाहेंगे उसे पा सकेंगे।

शुभारंभ] कला एवं संस्कृति प्रभाग की ओर से आध्यात्मिक सशक्तिकरण से दया एवं करुणा की संस्कृति विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

राजयोग के राज जानने के बाद जिंदगी के सभी सवालों के जवाब अपने आप मिल जाते हैं: प्रसिद्ध अभिनेत्री शशि शर्मा

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ के मनमोहिनीवन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में कला एवं संस्कृति प्रभाग द्वारा चार दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें मुंबई से जानीं-मानीं कई हस्तियों ने शिरकत की। आध्यात्मिक सशक्तिकरण से दया एवं करुणा की संस्कृति विषय पर आयोजित सम्मेलन में संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, प्रभाग के अध्यक्ष बीके दयाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बीके नेहा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन करनाल से पधारीं बीके प्रेम ने किया। वीडियो संदेश के माध्यम से संस्थान के महासचिव बीके निर्वैर ने शुभकामनाएं प्रेषित कीं। मुख्यालय संयोजक बीके सतीश ने आभार व्यक्त किया। जयपुर से आए राजस्थानी डांस ग्रुप के कलाकारों ने सुंदर नृत्य की प्रस्तुति दी।

परमात्मा से एक रिश्ता बनाएं

हम लोग जिंदगी भर किसकी तलाश में भटकते रहते हैं, यह हमें ही नहीं पता होता है। जब हम यह जान लेते हैं कि मैं कौन हूं? परमात्मा कौन हैं? मैं इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर क्यों आई हूं तो हमारा भटकना और तलाश पूरी हो जाती है। वास्तव में खुद को जानना, खुद के भीतर छिपी शक्तियों को जानना हम सभी के लिए बेहद जरूरी है। हम जिंदगीभर गुस्सा, एंजाइटी को जान ही नहीं पाते हैं कि इनका सॉल्युशन क्या है। ब्रह्माकुमारीज के ज्ञान को, राजयोग मेडिटेशन को जानने, समझने के बाद जीवन से जुड़े सभी सवालों के जवाब अपने आप मिल जाते हैं। हमें अपने अंदर मौजूद शक्तियों की पहचान हो जाती है। राजयोग मेडिटेशन को जीवन में अपनाने के बाद अब मेरे जीवन में कोई प्रॉब्लम ही नहीं रही है। जीवन में जो भी समस्या आती है तो उसे परमात्मा को बता देती हूं। फिर वही अपनेआप उसका समाधना ढूंढते हैं। परमात्मा से एक रिश्ता बनाएं। जब आप उससे रिश्ता बना लेंगे तो जीवन आसान हो जाएगा। कोई समस्या नहीं रहेगी।

● शशि शर्मा, सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री, निर्माता और निर्देशक, मुंबई

लगा जैसे स्वर्ग लोक में आ गई

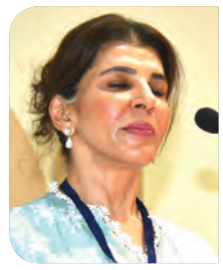

मैं भाग्यशाली हूं कि मुझे बाबा ने यहां बुलाया है। जैसे ही मैं यहां आई तो लगा कि परियों के पास स्वर्गलोक में आ गई हूं। अब यहां बार-बार आती रहूंगी। आबू रोड शांतिवन की पावन धरा पर आकर मन में असीम शांति की अनुभूति हो रही है। यहां सभी के मुस्कुराते चेहरे देखकर ही आपका तनाव दूर हो जाता है। यहां की व्यवस्था देखने लायक है। अब यह मेरा घर बन गया है।

● अनीता राज, प्रसिद्ध अभिनेत्री और वर्ल्ड ऑफ गिनीज़ बुक में रिकॉर्ड होल्डर, मुंबई

इन्होंने भी व्यक्त किए अपने उद्गार

- ग्वालियर से पधारे राजा मानसिंह तोमर संगीत एंव कला विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पं. साहित्य कुमार नाहर ने कहा कि ऊं शांति से ही संगीत के सभी स्वरों का प्रादुर्भाव हुआ है। ऊं के उच्चारण में सभी स्वरों का समावेश है। संगीत का वही कलाकार सार्थक है जो स्वरों को आंखों से देखता है।
- करनाल से पधारे एहसास पीस फाउंडेशन के निदेशक जावेद इकबाल खान ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनें देश-विदेश में जितनी सेवा निःस्वार्थ भाव से कर रहीं हैं, इतनी सेवा कोई कर नहीं सकता है। दिल्ली से आईं मिसेज इंडिया रनरअप डॉ. श्वेता डागर ने भी राजयोग से जुड़े अपने अनुभव सांझा किए।
- सुप्रसिद्ध अभिनेत्री बीना बनर्जी जैसे ही मंच पर आईं और भावुक हो गईं। जाते-जाते उन्होंने कहा कि जितना हो सकेगा यहां से खुद को भरपूर करके जाऊंगी।

मैं सिर्फ डांस के लिए पैदा हुई हूं

मैंने जीवन में अब तक अतिथि देवो भवः सुना था, लेकिन अब ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में आकर आज इसे प्रैक्टिकल में देखा है। मैंने बचपन में इंगलिस मीडियम स्कूल में परियों और स्वर्ग की कहानी को पढ़ा था। आज इस पावन भूमि में आकार साक्षात् ब्रह्माकुमारियों के रूप में परियों और स्वर्गलोक को देख भी लिया। जब मेरे साथ घटना हुई तो लोग कहने लगे थे कि तुमसे डांस नहीं हो पाएगा लेकिन मैंने कहा कि मैं डांस के लिए ही पैदा हुई हूं। उस दिन मैंने सोच लिया था कि मैं जीवन में कुछ करके दिखाऊंगी। दिल की प्रॉब्लम सिर्फ ऊपरवाले के साथ ही शेयर करती हूं। उसके अलावा कोई मदद नहीं सकता है।

● सुधा चंद्रन, सुप्रसिद्ध नृत्यांगना और टीवी एक्ट्रेस, मुंबई

हम वीर शिवाजी और महाराणा प्रताप चाहते हैं लेकिन पड़ोसी के घर में: केंद्रीय राज्यमंत्री नाईक

राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के शिपिंग, एविएशन, टूरिज्म विंग का तीन दिनी सम्मेलन मनमोहिनीवन में आयोजित

सम्मेलन का शुभारंभ करते केंद्रीय मंत्री नाईक व बीके भाई-बहनें।

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज के मनमोहिनीवन, ग्लोबल ऑडिटोरियम में शिपिंग एविएशन टूरिज्म विंग की ओर से राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें पहुंचे केंद्रीय पर्यटन राज्यमंत्री श्रीपद येसो नाईक ने कहा कि परमात्मा को याद करके, योगी बनके जीवन को अंतिम मार्ग, मोक्ष मार्ग पर ले जाने का कार्य ब्रह्माकुमारी संस्था कर रही है। यहां से दुनिया को एक नया मार्ग दिखाया जा रहा है। ब्रह्माकुमार भाई-बहनें समाज में दुर्व्यसन दूर करने का कार्य कर रहे हैं। एक अच्छे समाज और संस्कारों के निर्माण का काम किया जा रहा है। भारत की संस्कृति को फिर से स्थापित करने का कार्य संस्था कर रही है। हम चाहते हैं कि वीर शिवाजी महाराज और महाराणा प्रताप जी जैसे योद्धाओं, महापुरुषों का जन्म होना चाहिए लेकिन मेरे घर में नहीं, पड़ोसी के घर में होना चाहिए। इस मानसिकता से बाहर निकलना होगा। सम्मेलन दया एवं करुणा द्वारा आध्यात्मिक सशक्तिकरण विषय पर आयोजित किया गया। विंग की अध्यक्षा डॉ. बीके निर्मला ने कहा कि दुनिया में सभी चाहते हैं कि हमारे संपर्क में जो भी आएं वह हमें दया और करुणा से देखें। कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, उपाध्यक्ष बीके मीरा, राष्ट्रीय संयोजिका बीके कमलेश, मुख्यालय संयोजक बीके संतोष ने भी विचार व्यक्त किए।

सफलता के चक्कर में महिलाएं न भूलें अपनी शक्ति: शर्मा

शिव आमंत्रण, आबू रोड। महिलाओं को सफलता के चक्कर में अपनी शक्ति और अस्तित्व को नहीं भूलना चाहिए। उक्त उद्गार राजस्थान सोशल वेलफेयर बोर्ड की अध्यक्षा डॉ. अर्चना शर्मा ने व्यक्त किए। वे मनमोहिनीवन में आयोजित महिला सम्मेलन में संबोधित कर रहीं थीं। उन्होंने कहा कि महिला में पालना करने, सहन के साथ सुनने की क्षमता होती है। वे संयमी और साधना वाली होती हैं। महिलाओं का स्थान देवियों के रूप में ज्यादा दिखाया जाता है। ब्रह्माकुमारीज़ में महिलाओं को उच्च सम्मान दिया जाता है। यहां का राजयोग नारी को शक्ति का रूप देता है। इसलिए हमें अपनी पहचान को बनाए रखना चाहिए। भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु और मध्यम इंटरप्राइजेज मंत्रालय के राष्ट्रीय बोर्ड के सदस्या रश्मि मिश्रा, प्रोफेसर डॉ. उषा किरण, फिल्म समीक्षक भावना सोमैय, प्रभाग की अध्यक्षा बीके चक्रधारी, मुख्यालय संयोजिका बीके डॉ. सविता ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

न्यायिक प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने में राजयोग की भूमिका महत्वपूर्ण

न्यायविदों के सम्मेलन में जुटे देशभर के न्यायाधीश, अधिवक्ता और अधिकारीगण

शिव आमंत्रण, आबू रोड। मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय की न्यायाधीश सुनीता यादव ने कहा कि परमात्मा का सान्निध्य सही रूप में यदि हो जाए तो हर किसी के साथ सही न्याय होगा। परमात्मा का दरबार और स्थूल लोक का कोर्ट दोनों ही महत्वपूर्ण है। वह ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन में आयोजित न्यायविदों के सम्मेलन में बोल रही थीं। उन्होंने कहा कि कई बार कई केस बहुत ही उलझे हुए होते है ऐसे में कई बार लोगों की उम्मीदों के खिलाफ न्यायिक प्रक्रिया होती है। राजयोग ध्यान मनुष्य के जीवन में तरक्की का रास्ता खोलता है। इसलिए हमें जीवन में राजयोग को अपनाने का प्रयास करना चाहिए। संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके मुन्नी, गुजरात उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति एजे देसाई, मप्र उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश बीडी राठी, प्रभाग के अध्यक्ष बीएल माहेश्वरी, वरिष्ठ वकील पदमश्री रमेश गौतम, उपाध्यक्षा बीके पुष्पा, राष्ट्रीय संयोजिका बीके लता ने भी संबोधित किया।

सपनों का भारत] ब्रह्माकुमारीज़ में तैयार हो रही बालब्रह्मचारी, तपस्वी युवाओं की रुहानी फौज

स्वर्णिम भारत के स्वप्न को आकार देती 'युवा शक्ति'

घर-परिवार में रहते साधना के दुर्गम मार्ग पर आगे बढ़ रहे तपस्वी कुमार, समाज में बने अनुकरणीय उदाहरण

'एक विचार लें और इसे ही अपनी जिंदगी का एकमात्र विचार बना लें। इसी विचार के बारे में सोचें, सपना देखें और इसी विचार पर जिएं। आपके मस्तिष्क, दिमाग और रगों में यही एक विचार भर जाए। यही सफलता का रास्ता है। इसी तरह से बड़े-बड़े आध्यात्मिक धर्म पुरुष बनते हैं...' आज से 150 साल पहले स्वामी विवेकानंद जी ने जो सपनों का भारत देखा था। वह युवाओं में जो जोश, तरुणाई और जज्बा देखना चाहते थे। कांति और ओज से लवरेज चेहरे, मधुर वाणी और आंखों में चमक देखना चाहते थे, समाज कल्याण का स्वप्न और बालब्रह्मचारी जीवन देखना चाहते थे...आज ऐसे युवाओं की ब्रह्माकुमारीज़ में पूरी की पूरी रुहानी फौज तैयार हो गई है। ये युवा संपूर्ण ब्रह्मचर्य (मन-वचन-कर्म) का पालन करते हुए आंखों में नए भारत के स्वप्न के साथ स्वर्णिम भारत की तस्वीर उकेरने के भागीरथी कार्य में मातृशक्ति के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रहे हैं। शिव आमंत्रण का प्रयास है कि ऐसे तपस्वी युवाओं की जीवन कहानी अपने पाठकों के समक्ष लाना, ताकि युवा पीढ़ी ऐसे मूल्यनिष्ठ युवाओं से प्रेरणा ले सके और अपने जीवन को भी आदर्शवान, मूल्यवान और समाजोपयोगी बना सकें।

ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे से शुरू हो जाती है दिनचर्या

बचपन से ही घर में आध्यात्मिक माहौल मिला। जब मैं 11 साल का था तब से माता-पिता आध्यात्म के साथ संयम के मार्ग पर चल रहे हैं। धीरे-धीरे मेरा भी आध्यात्म और मेडिटेशन की ओर झुकाव बढ़ता गया। जैसे-जैसे बढ़ा हुआ तो मन में जिज्ञासा का भाव बढ़ता गया कि इस दुनिया से अलग भी कोई दुनिया होगी, जिसकी मुझे खोज करना है। दुनिया के रहस्य को जानना है। जीवन को समझना है। जैसे-जैसे मेरा राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास बढ़ता गया तो योग में गहन अनुभूतियां होने लगीं। तीन लोकों (स्थूल लोक, सूक्ष्म लोक, ब्रह्मलोक) की तस्वीर साफ हो गई। मेडिटेशन में परमात्मा की अनुभूति महसूस होने लगी। आज मेरी दिनचर्या ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे से शुरू हो जाती है। मैं माता-पिता का एकलौता बेटा हूं, इसलिए पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए ब्रह्मचर्य जीवन के साथ समाज कल्याण में जुटा हूं। कॉलेज के दिनों में पढ़ाई के दौरान भी कभी गलत संगत नहीं रही। आध्यात्मिक ज्ञान होने होने से कभी भी किशोरावस्था में कदम बहके नहीं। मेरा युवाओं से यही आह्वान है कि आध्यात्मिक ज्ञान हमें यह नहीं सिखाता है कि घर-बार छोड़ जंगल चले जाएं। आध्यात्म तो हमें जीवन जीने का सही मार्ग दिखाता है। आंतरिक शक्तियों का विकास करता है, इसलिए जीवन को सफलता के पथ पर ले जाने के लिए इससे जुड़ें।

● ब्रह्माकुमार निशांत (35)
एमकॉम, बीकानेर, राजस्थान (बीएसएनएल में एकाउंटेंट के पद पर कार्यरत)

परमात्मा की याद में मगन रहता है मन

वर्ष 2015 में सात साल पहले ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के संपर्क में आया। यहां सात दिन का राजयोग मेडिटेशन का कोर्स करने के बाद जीवन के कई रहस्यों से पर्दा उठ गया। मेरा वास्तविक परिचय क्या है? परमात्मा कौन हैं? उनका कर्तव्य क्या है? सृष्टि चक्र का रहस्य क्या है? चार युगों की यात्रा... आदि सवालों के जवाब मिल गए। राजयोग मेडिटेशन का जैसे-जैसे अभ्यास बढ़ता गया तो मन को असीम शांति मिलने लगी। जब से राजयोग का अभ्यास शुरू किया है तो पढ़ाई के दौरान कभी तनाव नहीं हुआ, न ही कभी गलत संगत में पड़ा। ब्रह्माकुमारीज़ में दीदियों के निःस्वार्थ स्नेह-प्यार से मैंने सीखा है कि वास्तव में जीवन में देने का कितने बड़ा पुण्य है। हम जीवनभर मांगते रहते हैं, मुझे सम्मान दो, मुझे प्यार दो लेकिन यहां सिखाया जाता है कि देना ही लेना है। जब आप किसी को प्यार-स्नेह देंगे, सम्मान देंगे तो आपको अपनेआप मिलेगा। ब्रह्मचर्य की धारणा, खानपान की शुद्धता के साथ रोजाना नियमित राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास ब्रह्ममुहूर्त में करता हूं। माता-पिता का गृहस्थ जीवन जीने (शादी करने) के लिए दबाव है लेकिन मेरा अटल निश्चय है कि मुझे स्वर्णिम भारत की स्थापना के कार्य में अपने जीवन की आहुति देना है। एकलौता बेटा होने के चलते मेरा फर्ज बनता है कि माता-पिता की सेवा करना, जिसे निभाने के संकल्प के साथ तपस्या के मार्ग पर चलने का भी निर्णय लिया है।

● ब्रह्माकुमार रवि (27),
बीएससी, बीएड, सागर, मप्र

परमात्मा के प्रति लगन देख पिताजी भी मान गए

जब मैं दो साल का था तो बीमारी के चलते मां का साथ छूट गया। पिताजी ने ही माता-पिता का प्यार दिया और पाला। पढ़ाई पूरी होने के बाद मैं अध्यापन के कार्य से जुड़ गया। इस दौरान मेरा झुकाव आध्यात्म की ओर हो गया। तब मेरी उम्र करीब 24 साल थी। कई पुस्तकें और साहित्य पढ़े तो लगन और ही बढ़ती गई। इस दौरान मैं लगातार टीवी पर प्रसारित होने वाले ब्रह्माकुमारी शिवानी दीदी के अवेकनिंग प्रोग्राम को देखता था। दीदी के मोटिवेशनल और आध्यात्मिक स्पीच से धीरे-धीरे विचारों में सकारात्मकता आने लगी और फिर मैंने सेंटर पर जाकर सात दिन का राजयोग मेडिटेशन का कोर्स किया। इसके बाद दीदियों के मार्गदर्शन में राजयोग मेडिटेशन का कोर्स पूरा किया। इससे जहां मेरी सोच पूरी तरह सकारात्कम हो गई और जीवन में जागरूकता सी आ गई। लोगों को प्रति व्यवहार भी बदल गया। साथ ही कार्यक्षमता भी बढ़ गई। मुझ में आए बदलाव को देखकर पिताजी ने भी राजयोग कोर्स करने की इच्छा जताई और वह भी पूरी तरह से आध्यात्म में लीन हो गए। मैं उनका एकलौता बेटा होने से पहले पिताजी ने शादी करने के लिए दबाव बनाया लेकिन मेरा परमात्मा में अटल निश्चय, लगन और योग-तपस्या को देखकर बाद में वह भी राजी हो गए। आज पूरी पवित्रता, ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए घर में मैं और पिताजी जीवन के पलों को आनंद के साथ गुजार रहे हैं।

● ब्रह्माकुमार राजेश (36),
शिक्षक, एमए, डीएड, शिवपुरी, मप्र

मेरे मित्र को देखकर मैं भी बदल गया

मेरा घनिष्ठ मित्र गजेंद्र सिंह (पठारी, सागर) बहुत भक्ति करता था। उसके जीवन में अचानक कई बदलाव आ गए। वह पहले जहां अशांत रहता था और बात-बात पर गुस्सा हो जाता था वहीं अब शांत और खुश रहने लगा। ब्रह्ममुहूर्त में मेडिटेशन के साथ सिर्फ पॉजीटिव बातें करना, सबके प्रति शुभ भावना रखना, समाज कल्याण की बातें करना। यह देखकर मैंने उससे इस परिवर्तन के बारे में पूछा तो उसने ब्रह्माकुमारीज़ के बारे में बताया कि कैसे सात दिन का राजयोग मेडिटेशन कोर्स करने के बाद उसकी जिंदगी बदल गई। इसके बाद मैंने भी राजयोग कोर्स किया। उस समय मैं कक्षा 9वीं में पढ़ता था। राजयोग के अभ्यास से पढ़ाई में मन लगने लगा और मन से नकारात्मकता समाप्त होने लगी। इसके बाद मार्च-2013 में माउंट आबू आया। यहां के पॉवरफुल आध्यात्मिक वाइब्रेशन से बहुत सुखद अनुभूति हुई। इसके बाद मैंने संस्थान के आध्यात्मिक साहित्य का गहन अध्ययन किया और मन में चले रहे सभी सवालों के जवाब धीरे-धीरे मिलते गए। मैं घर में अपने माता-पिता का एकलौता बेटा हूं। ब्रह्मचर्य के पालन के साथ आज खुशहाल जीवन जी रहा हूं। मुझ में आए परिवर्तन को देखकर माता-पिता भी प्रभावित हैं। हालांकि उनका दवाब है कि मैं शादी करुं। लेकिन परमात्मा पिता का सच्चा परिचय मिलने के बाद अब अपना जीवन शिव बाबा की सेवा में ही अर्पण करने का फैसला किया है।

● ब्रह्माकुमार राजेंद्र (24),
बीए, पीजीडीसीए, शिवपुरी, मप्र

ब्रह्मचर्य व्रत के साथ परमात्मा को जीवन अर्पित

मार्च-2005 की बात है। मेरे पड़ोसी जो कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से जुड़े थे, उन्होंने एक बार मुझे अलविदा तनाव शिविर अटेंड करने के लिए कहा। इस शिविर से मुझे निर्व्यसनी और क्रोधमुक्त जीवन जीने की प्रेरणा मिली। इससे तन-मन-धन की बचत हुई और परिवार और समाज में प्रतिष्ठा बढ़ गई। धीरे-धीरे जैसे राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास बढ़ता गया तो जीवन से जुड़े कई रहस्यों से भी पर्दा उठता गया। मन को असीम शांति मिलने लगी। व्यर्थ कार्यों और गलत संगत से बच गया। पहले जहां बेवजह समय बर्बाद करता था वह आध्यात्मिक साहित्य पढ़ने, ध्यान और सेवा कार्यों में समय जाने लगा। खुद को भाग्यशाली समझता हूं कि समय रहते मुझे आत्मा-परमात्मा का सत्य ज्ञान मिल गया। ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए अब जीवन परमात्मा पिता की सेवा में अर्पण करने का संकल्प किया है। मेरे संकल्प में परमात्मा की भी पूरी मदद मिल रही है। शादी के लिए परिवार वालों का दबाव रहा है लेकिन मेरी आध्यात्म के प्रति लगन देखते हुए अब तो उन्होंने ने भी सहर्ष स्वीकृति दे दी है। जब हम पवित्रता के व्रत को गहराई से अपनाते हैं और इसका अनुभव अपने जीवन में करते हैं तो इससे जो शांति-सुख की अनुभूति होती है, उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है। मेरी युवाओं से आह्वान है कि नशे में, फैशन में सिर्फ समय बर्बाद करना है। जीवन को गहराई से जानने,समझने का भी प्रयास करना चाहिए।

● बीके रवि (36), 12वीं, जिला-रोहिनी, दिल्ली

अपने विद्यार्थियों के लिए भी मेडिटेशन कराता हूं

जब मैं कक्षा 9वीं में था, तब ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से जुड़ गया था। कुछ दिनों के बाद मेरी माताजी का निधन हो गया। इस पर मेरे सेंटर की बड़ी बहनजी आदरणीय पुष्पा दीदी (नवापारा, राजिम) ने मां की तरह मेरी पालना की, स्नेह दिया। एक साल बाद ही मेरे बड़े भाई का भी निधन हो गया, जिसका बहुत गहरा आघात पहुंचा। लेकिन आध्यात्मिक ज्ञान होने और दीदियों के मार्गदर्शन से खुद को संभाला और पढ़ाई जारी रखी। संस्थान से जुड़ने के बाद रोज सुबह सत्संग (मुरली क्लास) में जाना दिनचर्या में शामिल हो गया। राजयोग सीखने के बाद मन शांत हो गया और पढ़ाई में लगने लगा। बचपन में बहुत क्रोध आता था। भोजन की थाली तक फेंक देता था लेकिन राजयोग से मन शांत हो गया। आर्थिक स्थिति कमजोर होने से खुद कमाकर 11वीं और 12वीं की पढ़ाई निजी स्कूल से पूरी की। वर्ष 2018 में केंद्रीय विद्यालय, सुकमा से घर के लिए आ रहा था। रात 12.10 बजे बस पेड़ से टकराकर पांच फीट नीचे खाई में गिर गई। चारों तरफ चीखने-चिल्लाने की आवाजें आ रहीं थीं लेकिन परमात्मा का कमाल था कि मैं सुरक्षित बच गया। स्कूल में बच्चों को दो मिनट मेडिटेशन कराके कक्षा शुरू करता हूं। बच्चों को भी बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव होने लगे हैं। ब्रह्मचर्य व्रत के साथ जीवन पथ पर आगे बढ़ता जा रहा हूं। परमात्मा की याद में खुद ही अपना भोजन बनाता हूं। जीवन धन्य हो गया है।

● ब्रह्माकुमार सेवाराम (32),
ग्राम डूमरपाली, धमतरी, छग

संपादकीय

आत्मा का शुद्धिकरण ही मोक्ष का प्रतीक है

लोग कहते है कि मोक्ष के लिए आत्मा का शुद्धिकरण जरूरी है। आखिर क्या है आत्मा का शुद्धिकरण। मनुष्य के मन में छिपे आसुरी विचारों, नकारात्मक वृत्तियों को समाप्त कर मन को पानी की तरह साफ सुथरा रखना ही आत्मा का शुद्धिकरण है। इसके लिए मन और विचारों में पवित्रता, शुद्धता और शीतलता का समावेश करना ही अपने आपको मोक्ष की तरफ ले जाना है। मोक्ष का मतलब हमेंशा के लिए जन्म मरण से दूर होना नहीं बल्कि जीवन में रहते भी जीवन के भान से उपर उठना है। कर्म करते भी कर्म के बंधन में बंधना नहीं है। कर्म के प्रभाव से परे रहना है। यह तभी संभव है जब हम अपने मन, वचन, कर्म को साफ और शुद्ध बनायें। रोजाना जीवन में सकारात्मक विचारों के साथ दिनचर्या की शुरूआत करें। सामने कुछ नकारात्मक बातें आये तब भी उसे सकारात्मक दिशा में बदलें और बदलने की भरसक कोसिश करते रहें। बड़ी बातों को छोटा बनाना आना चाहिए। मन को हमेंशा खुश रखकर हल्का रखें। इसके लिए प्रतिदिन राजयोग ध्यान और साधना जरूरी है। इसलिए हम आध्यात्मिक साधना को अपने जीवन का एक हिस्सा बना लें। प्रतिदिन की दिनचर्या में शामिल करना ही मोक्ष की ओर पहला कदम बढ़ाना है। मन को हर तरह स्वतंत्र बंधनमुक्त महसूस कराना ही मोक्ष अर्थात सच्ची मुक्ति को पाना है जो जीते जी ही संभव है।

मेरी कलम से...

डॉ. आशीष द्विवेदी
निदेशक, इंक मीडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन, सागर,मप्र

शिव बाबा के शुभाशीष से भारत के शीर्ष पद पर जा विराजीं मुर्मू

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। मेरी आपसी चर्चा के दौरान राष्ट्रपति के लिए चयनित द्रौपदी मुर्मू को लेकर राय बहुत अच्छी नहीं थी। भला ये क्या कि आप किसी भी गुमनाम से गांव की गुमनाम सी महिला को हम पर थोप दें, सिर्फ इसलिए कि आपकी वाहवाही हो जाए, महानता प्रदर्शित हो। लेकिन अब जब द्रौपदी मुर्मू की संघर्ष गाथा पढ़ी तो उनके प्रति मन श्रद्धा, गौरव और अभिमान से भर गया। उनकी अदम्य इच्छाशक्ति, जिजीविषा, जीवटता, सरलता, समर्पण सब निहाल करने वाला था। वो एक ऐसी नारी शक्ति जो सबकुछ गंवाकर, लुटाकर शून्य से शिखर का सफर करने वाली हैं। सबकुछ हारकर जीतने वालीं। एक महिला जो महज छह साल में एक-एक कर सारे करीबियों को खो दे, दोनों बेटे, पति, मां, भाई सब भगवान को प्यारे हो जाएं तो उस पर क्या बीतेगी! पता नहीं। उनकी जगह और कोई होता तो इतना कुछ बीतने के बाद वो रह भी पाता या नहीं, शायद नहीं। लेकिन उन्हें भारतवर्ष के महामहिम का पद सुशोभित कर उन करोड़ों- करोड़ महिलाओं का प्रेरणापुंज जो बनना था जो जरा सी खरोंच से बिखर जाती हैं, सर्वस्व स्वाहा कर जीवन की इतिश्री कर लेती हैं। मानवीय प्रकृति के अनुरूप उन्हें भी अवसाद आया, जीवन नाना तरह के तमस से घिर गया। एक अंधेरी काली सुरंग जैसा, लेकिन 'द्रौपदी' नाम कोई छोटा नहीं होता। वो किसी और ही मिट्टी का बना था। उन्होंने जीवन में सिर्फ वापसी नहीं की बल्कि बंपर वापसी, धमाकेदार वापसी की। वो ब्रह्माकुमारीज़ की शरण में गईं, जहां सिर्फ पॉजीटिव वाइब्रेशन मिलते हैं। मेडिटेशन ने उन्हें अपनी जीवन ऊर्जा को रूपांतरित करने में अहम किरदार निभाया। उनके कुम्हलाए और मुरझाए प्राण फिर लहलहा उठे। शिव बाबा के शुभाशीष से वो भारत के शीर्ष पद पर जा विराजीं। कोई भला कैसे कल्पना करेगा कि जो गांव राजनीति को तिरस्कृत और त्याज्य दृष्टि से देखता हो वहां के एक उपेक्षित समाज की ये महिला सर्वोच्च हासिल कर सकती है। कोई कैसे उम्मीद करेगा कि 25 बरस पहले जो मामूली जगह की पार्षद थी, वो देश की महामहिम बनेगीं। लेकिन यह सब कल्पनातीत रचने वालीं द्रौपदी मुर्मू सच्चे अर्थ में इस पद की हकदार हैं। वो बरसों-बरस तक भारत के उस समाज के लिए प्रेरणा की मशाल बनी रहेंगी जो जीवन संग्राम में जरा से हवा के झोंके से अपने को समाप्त प्रायः मान लेता है।

मेडिटेशन से ही जागृत होंगी आंतरिक शक्तियां

सूत्र यह है कि यदि आपको अपने भीतर छिपी अनंत, अपरिमित, अपरंपार शक्तियों को जाग्रत करना है तो मेडिटेशन की शरण में जाइए। ये शक्ति बाहर नजर नहीं आएंगी अंदर ही हैं, कस्तूरी की भांति। संसार का कितना भी बड़ा अवसाद हो उससे स्व प्रेरणा से ही बाहर आया जा सकता है। भारत की राष्ट्रपति इसका अनुपम और जीवंत उदाहरण हैं। मेरा अनुभव रहा है कि जब ब्रह्माकुमारीज़ के माउंट आबू जाने का अवसर मिला तो वहां की दैवीय शक्ति, आध्यात्मिक ऊर्जा से फिर से तरोताजा हो गया। यहां की व्यवस्थाएं, मैनेजमेंट सब अद्भुत है।

बोध कथा/जीवन की सीख

शांति-धीरज महत्वपूर्ण

[नए विचारों का जन्म प्रकृति के बीच एकांत और शांति के द्वारा ही संभव है, कुछ पल एकांत में रहें]

एक बार महात्मा बुद्ध अपने शिष्य आनंद के साथ कहीं जा रहे थे। राह में काफी चलने के बाद दोपहर में एक वृक्ष तले विश्राम को रुक गए और उन्हें प्यास लगी। आनंद पास स्थित पहाड़ी झरने पर पानी लेने गया लेकिन झरने में अभी-अभी कुछ पशु दौड़ कर निकले थे। जिससे उसका पानी गंदा हो गया। पशुओं की भागदौड़ से झरने में कीचड़ ही कीचड़ और सड़े पत्ते बाहर उभर कर आ गए थे। गंदा पानी होने के कारण आनंद पानी बिना पीए ही लौट आए। उसने महात्मा से कहा कि झरने का पानी निर्मल नहीं है। मैं पीछे लौटकर नदी से पानी ले आता हूं, लेकिन नदी बहुत दूर थी तो बुद्ध ने उसे झरने का पानी ही लाने को वापस लौटा दिया।

आनंद थोड़ी देर में फिर खाली लौट आया। पानी अब भी गंदा था। पर बुद्ध ने उसे इस बार भी वापस लौटा दिया। कुछ देर बाद जब तीसरी बार आनंद झरने के पास पहुंचा तो देखकर चकित हो गया। झरना अब बिल्कुल निर्मल और शांत हो गया था। कीचड़ बैठ गया था और जल बिल्कुल निर्मल हो गया था।

महात्मा बुद्ध ने उसे समझाया कि यही स्थिति हमारे मन की भी है। जीवन की दौड़ - भाग मन को भी छिन्न कर देती है। मथ देती है पर कोई यदि शांति और धीरज से उसे बैठा देखता रहे तो कीचड़ अपने आप नीचे बैठ जाता है और सहज निर्मलता का आगमन हो जाता है। हमें अपनी जिंदगी में भागदौड़ के बीच रोजाना कुछ पल अपने लिए भी निकालना चाहिए। इन पलों में शांति से एकांत में बैठकर अपनी समीक्षा करना चाहिए। विचारों की गति देखना चाहिए कि क्या मैं सही दिशा में जा रहा हूं। क्यों जीवन में बिना लक्ष्य के ही हम भागे चले जा रहे हैं। जीवन को समझना है तो एकांत और शांति में जाना होगा।

संदेशः दुनिया में जितने भी महापुरुष हुए हैं सभी ने वर्षों तक एकांत में रहकर, प्रकृति के बीच मौन रहकर साधना की और विश्व को नए सूत्र व सिद्धांत दिए। नए विचारों का जन्म एकांत, शांति में ही संभव है।

आत्मिक आश्रय से मौन साधना द्वारा महान स्वरूप

जीवन का मनोविज्ञान भाग - 50

डॉ. अजय शुक्ला
बिहेवियर साइंटिस्ट, गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

महान स्वरूप की संकल्पना का व्यावहारिक परिदृश्य

आत्मिक आश्रय से मौन साधना द्वारा महान स्वरूप की संकल्पना का व्यावहारिक परिदृश्य निर्मित होता है, जिसमें आत्मानुभूति के पश्चात् निरंतर शुद्ध उपयोग हेतु आध्यात्मिक जगत से प्रेरणा ग्रहण करके पुरुषार्थ में संलग्नता प्रगाढ़ हो जाती है। जीवन में महानता के उच्च आयाम से आबद्ध हो जाना मनुष्य, मनुष्यता एवं संवेदनशीलता के अनुकरण एवं अनुसरण की परिणिति है जो जगत में महामानव की व्यापकता के रूप में परिलक्षित होती है। आत्मा के महानतम उच्चता की भावभूमि जब स्वमान, स्वरूप एवं स्वभाव की वास्तविकता से प्रतिध्वनित होती है तब आत्मिक स्मृति, स्थिति, अवस्था और स्वरूप के प्रतिबिम्ब मानव जीवन की धन्यता से अभिभूत हो जाते हैं। जीवन की विराटता को प्रतिपादित करने की पवित्र दृष्टि और दृष्टिकोण की उच्चता आत्मगत परिवेश को संपूर्ण समर्पण से सर्वगुण सम्पन्नता का सर्वोच्च स्वरूप प्रदान करके महान आत्मा के रूप में रूपांतरित कर देती है। महान आत्मा के स्वरूप में स्थापित होने के पश्चात् व्यावहारिक परिदृश्य पूर्णतः धर्मपथ के अनुगमन से युक्त हो जाता है और धर्मात्मा के आचार, व्यवहार से देवात्मा की ओर प्रस्थान, प्रबल पुरुषार्थ के यथार्थ में परिणित हो जाता है।

पुण्य आत्मा के यथार्थ परिवेश की मनोभूमिः जीवन के अनुक्रम में सर्वप्रथम आत्म तत्व के चिंतन पक्ष पर व्यक्तिगत पुरुषार्थ की स्थितियां विकसित होती हैं जहां मन, बुद्धि एवं संस्कार के सकारात्मक परिवर्तन की व्यावहारिकता हेतु अध्यात्म का अनुगमन अनिवार्य होता है। आत्मिक आश्रय के परिणाम स्वरूप अन्तर्मुखी अवस्था से मौन साधना के स्वरूप तक पहुंचना सहज हो जाता है और मानव की स्वाभाविक प्रक्रिया में कर्म, पुरुषार्थ एवं भाग्य के परिष्कार हेतु संकल्पित मनःस्थिति के सानिध्य में गतिशीलता आरंभ हो जाती है। सतोप्रधान प्रवृत्ति की ओर उन्मुख होती आत्मिक दशा का मनोरथ जब चेतना, चिंतन एवं पुण्य के निर्माण हेतु सदा जागृति की पृष्ठभूमि से स्वयं के उत्थान में संलग्न हो जाता है तब वह पुण्यात्मा के यथार्थ परिवेश की मनोभूमि के निर्माण में सक्षम हो पाता है। महानता की उच्चता से जुड़ी संकल्पना आत्मिक शक्ति का वह प्रकाश पुंज है जो सर्व मानव आत्माओं में सन्निहित रहता है तथा भागीरथ प्रयत्न के फलस्वरूप आत्मा द्वारा यह उच्चतम स्वरूप प्राप्त किया जाता है। आत्म तत्व का अनवरत परिष्कृत स्वरूप जीवन की उच्चता का उपलब्धिपूर्ण परिणाम है जो सम्पूर्ण आत्मिक परिदृश्य को धर्म के कल्याणकारी कार्यों की सम्पन्नता हेतु सदा अभिप्रेरित करता रहता है।

आत्मिक आश्रय से महान आत्मा का साक्षात्कार

आत्म चिंतन का परिष्कृत स्वरूप सक्षमता के व्यावहारिक उपागम के प्रति संचेतना को श्रेष्ठतम स्वरूप में विकसित करता है, जिससे आत्मगत उच्चता महानता की ओर अग्रसर होते हुए कर्म की पवित्रता को अक्षुण्य बनाए रखने का जतन कर सके। जीवन में महान आत्मा का साक्षात्कार हो जाना व्यक्तिगत पुरुषार्थ की उच्चतम परिणिति है जो आत्मानुभूति के द्वारा सुनिश्चित होती है। जिसमें आत्मिक आश्रय के प्रामाणिक प्रबोधन नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहते हैं। आत्म स्थिति में स्थित रहकर चेतना के आध्यात्मिक पक्ष से स्वयं को उच्च अवस्था में परिवर्तित कर लेने की साधना ही आत्म स्वरूप की महानता का उपलब्धिपूर्ण परिणाम होता है। स्वयं की उत्कृष्टता का अनुभव अंतर्मन को सदा महान आत्मा के रूपांतरण हेतु अभिप्रेरणा प्रदान करता है, जिसमें आत्मा को सर्वगुण संपन्नता के वास्तविक स्वरूप की यथार्थता को स्वीकार करने का गहन बोध सम्मिलित होता है।

केवल ज्ञान से कुछ फायदा नहीं है, वह कब और कैसे इस्तेमाल किया जाए, इसका ज्ञान होना आवश्यक है।

-स्वामी विवेकानंद

अगर मनुष्य का मन शांत, चित्त प्रसन्न है, हृदय हर्षित है तो निश्चय ही ये पुण्य कर्मों का फल है।

-महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती

संयम की राह] बहनें बोलीं- अब सारा विश्व ही हमारा परिवार है, हम सभी एक पिता की संतान आत्मिक रूप से भाई-भाई हैं

15 कुमारी बनीं ब्रह्माकुमारी, शिव को साजन के रूप में स्वीकारा

मानवता की सेवा में समर्पित किया अपना जीवन

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। आध्यात्मिक साधना का मार्ग तलवार की धार के समान होता है, जिसमें पग-पग फूंककर और साधकर चलना होता है। संयम के मार्ग पर चलने का फैसला साहस, त्याग और जीवन का सबसे बड़ा समर्पण है। लाखों में से विरले लोग ही जीवन को इस साधना पथ पर ले जाने की संकल्प लेते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के पानीपत स्थित ज्ञान मानसरोवर रिट्रीट सेंटर में हाल ही में हुए समारोह में 15 कुमारियों ने अपना जीवन समाज सेवा, समाज कल्याण और तपस्या के मार्ग पर चलने का निर्णय लिया। उन्होंने परमपिता शिव को साजन के रूप में स्वीकारते हुए उन्हें वरमाला पहनाई और वह कुमारी से ब्रह्माकुमारी बन गईं।
इस ऐतिहासिक पल के साक्षी 3500 से अधिक लोग बने। अपनी कलेजे के टुकड़े को संयम के दुर्गम मार्ग पर चलने के संकल्प और समर्पण समारोह के दौरान अभिभावकों के चेहरों पर खुशी की चमक देखते ही बन रही थी। धन्य हैं ऐसे मात-पिता जिनके घर में ऐसी बेटियां जन्म लेती हैं। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती बहन ने सभी बहनों को संकल्प कराया। समारोह में राज्यसभा सांसद कृष्णलाल पंवार, पंजाब जोन की निदेशिका बीके प्रेम लता, जीआरसी के निदेशक बीके भारत भूषण, सब जोन इंचार्ज बीके सरला मुख्य रूप से मौजूद रहीं। समर्पण करने वालीं बहनों के जीवन के अनुभव...

24 जुलाई 2022 को जिस दिन मेरा समर्पण हुआ मेरी लाइफ का सबसे अच्छा दिन था। मैं उस समय अपने आप को पार्वती के रूप में अनुभव कर रही थी। खुद को इस संसार में होते हुए भी संसार से अलग महसूस कर रही थी। जब मैंने परमपिता शिव को साजन के रूप में स्वीकारा और माला पहनाई तो लगा दुनिया की तमाम खुशियां मेरे दामन में आ गई हों। मैंने अविनाशी साथी को पाया है जो हर पल साथ निभाता है। वह अमरनाथ है तो मैं सदा सुहागन रहूंगी। वह एक अच्छे साथी की तरह मेरे हर संकल्प को सुनता है और पूरा भी करता है। पल-पल अपने भाग्य के गीत गाती हूं। वाह बाबा वाह, वाह मेरा भाग्य।

- बीके दिव्या (33), एमए, बापौली, पानीपत

पिछले नौ साल से ब्रह्माकुमारी सेंटर पर पूरी धारणाओं और मर्यादाओं के साथ चल रही हूं। बचपन से ही आस थी कि जीवन में कुछ ऐसा करना है जिसे कोई नहीं करता है। परमात्मा पिता ने मेरी इच्छा पूरी कर दी। जिसके लिए दुनिया तलाश रही है, वह ईश्वर हमें मिल गया। मैंने शिवबाबा से संकल्प किया है कि यह जीवन आपका है, कभी भी आपका हाथ छोड़कर नहीं जाऊंगी। आपकी श्रीमत का, मर्यादाओं का पालन करूंगी। दूसरों की सेवा में आगे रहूंगी। मेरे इस निर्णय में मेरे लौकिक माता-पिता ने भी सहर्ष स्वीकृति दे दी। खुद को भाग्यशाली समझती हूं कि यह जीवन समाज के काम आ सकेगा

- बीके सुषमा (26), 12वीं, मॉडल टाउन, पानीपत

बचपन से बहुत भक्ति की। कथाएं सुनीं, सत्संग किया। लेकिन मन की प्यास बुझ नहीं रही थी। मैं भगवान से कहती थी कि यदि आप हैं तो मुझे सत्य की राह दिखाएं। एक दिन अचानक ब्रह्माकुमारी सेंटर जाना हुआ। उस समय वहां मुरली चल रही थी तो मुझे दीदी के मस्तक पर लाइट चमकती हुई दिखाई दी और बहुत सुखद अनुभूति हुई। उस दिन मुझे विश्वास हो गया कि मैं जिसकी तलाश में थी यह वही है। फिर मैंने राजयोग कोर्स किया और परमात्मा का सत्य परिचय मिलने के बाद अपना जीवन समाज कल्याण में समर्पित करने का फैसला माता-पिता की सहमति से किया।

- बीके सोनिया (25), 12वीं, ज्ञान-मान सरोवर, पानीपत

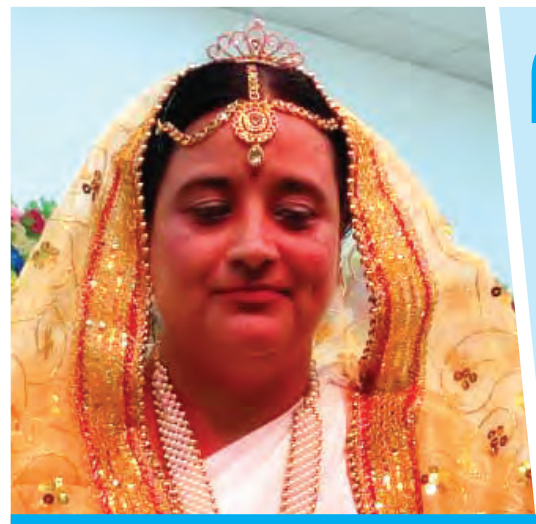

पुराने जन्म के पुण्य कर्मों का फल है कि इस जन्म में स्वयं सृष्टि के रचनाकार शिव बाबा साजन के रूप में मिल गए। आज ब्रह्माकुमारी बनकर गर्व महसूस हो रहा है। बचपन से ही इच्छा थी कि तप और संयम के मार्ग पर चलना है। अपने लिए तो सभी जीवन जीते हैं लेकिन मुझे समाज के लिए, समाज के कल्याण के लिए जीना है। जीवन में जो मर्यादाएं और धारणाएं परमात्मा ने बताई हैं उनका पूरे समर्पण भाव के साथ पालन करने का प्रयास करती हूं। जब कोई हैरान-परेशान भाई-बहन आते हैं और राजयोग से उनके जीवन में खुशी लौट आती है तो इन पलों को शब्दों में बयां नहीं कर सकती हूं।

- बीके पूनम, (37) दत्ता कॉलोनी, पानीपत

जब पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ में आई तो दीदियों की पवित्रता, सादगी और स्नेह ने दिल को छू लिया। उनका दिव्य जीवन देखकर मैंने उसी दिन ब्रह्माकुमारी बनने का संकल्प कर लिया था। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के इस कार्य में स्वयं भगवान ने हमारा सहयोग लिया है। यह मेरा परम सौभाग्य है कि स्वयं भगवान जो परम अथॉरिटी है उसने मुझे अपनी सजनी के रूप में चुना है। दुनिया में पति को ईश्वर समझते हैं और यहां स्वयं ईश्वर पति रूप में मिला है। मुझे मिस्टर गॉड का टाइटल मिला है जो किसी और को नहीं मिला, यह नशा मेरे योग को और बढ़ा रहा है।

- बीके नीतू (32), एमए, सिवाह, पानीपत

वर्ष 2011 में गांव में सेंटर की ओर से आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। लौकिक माता जी वहां गईं और ज्ञान सुना। उन्हें अच्छा लगा इसलिए वे मुझे भी साप्ताहिक राजयोग कोर्स में ले गईं। उस दिन से मुझे भी इस ज्ञान- योग व विशेष पवित्रता ने आकर्षित किया। मैंने अंदर ही अंदर निर्णय किया कि मुझे भी ब्रह्माकुमारी ही बनना है। इसके लिए परिवार की ओर से अनेक विघ्न भी आए लेकिन मेरा लक्ष्य दृढ़ रहा और बाबा का हाथ नहीं छोड़ा। अंत में दृढ़ता की विजय हुई और मैं सेंटर पर समर्पित रूप से रहने लगी। परमात्मा शिव साजन का धन्यवाद किन शब्दों में अदा करूं।

-बीके मंजू (29), बीएससी, सुखदेव नगर, पानीपत

कर्मयोगी अर्थात् निरंतर निर्विकल्प समाधि में रहने वाले सहज योगी बनो।

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जयप्रकाश नड्डा को माउंट आबू से पधारीं एजुकेशन विंग की मुख्यालय संजोजिका बीके शिविका एवं साथ में हैं वरिष्ठ राजयोगी बीके प्रकाश भाई।

कोटा। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को राखी बांधते हुए बीके उर्मिला एवं बीके ज्योति। इस दौरान उन्होंने माउंट आबू मुख्यालय के अपने अनुभवों को भी बहनों के साथ सांझा किया।

दिल्ली। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर को परमात्म रक्षासूत्र बांधते हुए वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके विजया बहन एवं माउंट आबू से पधारीं बीके शिविका।

दिल्ली। भारत के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह को परमात्म रक्षासूत्र बांधते हुए गुरुग्राम स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर की निदेशिका राजयोगिनी बीके आशा दीदी एवं साथ में बीके बहन।

दिल्ली। रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव को रक्षासूत्र बांधते हुए वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके विजया बहन, बीके शिविका एवं साथ में संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, वरिष्ठ राजयोगी बीके प्रकाश।

दिल्ली। केंद्रीय राज्यमंत्री जयकिशन रेड्डी को परमात्म रक्षासूत्र बांधते हुए बीके शिविका बहन। इस दौरान उनसे अमृत महोत्सव के तहत चल रही सेवाओं की जानकारी से भी रुबरु कराया।

भारत वसंत बिहार/ नई दिल्ली। भारत सरकार में आदिवासी विकास मंत्री विश्वेवर टुडु को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात मुख मीठा कराती हुई बीके कृष्णा एवं बीके विकास।

दिल्ली। केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्र शेखावत को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए बीके सविता। इस दौरान उन्होंने राजयोग मेडिटेशन को लेकर भी चर्चा की और इसके लाभ बताए।

हरिनगर/बिहार। भारतीय तटरक्षक बल के महानिदेशक वीरेंदर सिंह पठानिया को राखी बांधते हुए बीके सारिका और बीके रीतू। इस दौरान उनसे आध्यात्म को लेकर भी बहनों ने चर्चा की।

घाटकोपर/मुंबई। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फणनवीस को परमात्म रक्षासूत्र बांधते हुए वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका व घाटकोपर सेवाकेंद्रों की निदेशिका बीके शाकू।

ब्रह्माकुमारी बहनों ने लेकर जेल में बंदियों

ब्रह्माकुमारी बहनें बोलीं- हमारे भाई जो स नहीं आ सकते हैं उन्हें राखी भेजकर आज

ब्रह्माकुमारी बहनों ने परमात्म रक्षासूत्र हाथ में लेकर इसमें परमात्म से देश की रक्षा में तैनात फौजी भाईयों के लिए भेजे। इनका कहना

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। आज यदि हम चैन की नींद निश्चिंत होकर स जज्बे की बदौलत। हमारे फौजी भाई अपनों से दूर रहकर हर सर्दी, गर्मी, पर जो फौजी भाई अपनी बहनों से रक्षासूत्र बंधवाने घर नहीं आ सकते भेज रहे हैं। हमें आशा है कि आप इसे प्रेम से स्वीकार कर अपने कलाई आबू रोड से 51 बहनों ने सरहद पर तैनात फौजी भाईयों के लिए परमात्म सभी फौजी भाइयों के लिए शुभ संकल्प, शक्तिशाली संकल्पों के साथ दे के राजौरी गार्डन, नरेला सेंटर की बीके मोनिका बहन और बनारस की ब भाइयों को रक्षासूत्र भेजने का शुभ अवसर मिला। परमपिता शिव परमा देशवासियों की दुआएं आपके साथ हैं। संस्थान के पीआरओ बीके कोम

पटना। बिहार के राज्यपाल फागू चौहान को रक्षासूत्र बांधते हुए बीके संगी अन्य बहनें। इस दौरान उन्होंने माउंट आबू में सितंबर में होने वाली ग समिट में पधारने का भी निमंत्रण दिया।

नवसारी/गुजरात। मध्यप्रदेश के राज्यपाल मंगूभाई पटेल को नवसारी गु की निदेशिका बीके गीता ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर उन्हें अमृत महोत्स तहत चल रहीं सेवाओं की जानकारी दी।

द पर तैनात जवानों से बांधा परमात्म रक्षासूत्र

की रक्षा में तैनात हैं और रक्षाबंधन पर घर स हो रहा है, धूमधाम से मनाया रक्षाबंधन

और योग करके शुभ बाइब्रेशन दिए। इसके बाद इन्हें लिफाफे के माध्यम गर्व हो रहा है कि हमारे फौजी भाई ये राखी बांधेंगे।

पीछे हमारे देश के वीर जवान, फौजी भाईयों के त्याग, समर्पण, सेवा और सलिए सरहद पर डटे रहते हैं कि हम देशवासी सुरक्षित रहें। इस रक्षाबंधन भक्त भाईयों के लिए हम बहनों बहुत प्यार से, स्नेह से परमात्म रक्षासूत्र कहना है ब्रह्माकुमारी बहनों का। ब्रह्माकुमारीज के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय साथ ही ढेर सारी दुआएं और परमपिता परमात्मा से शुभ बाइब्रेशन लेकर दा ऐसे ही समर्पित भाव से सेवा करने की शक्ति का आशीर्वाद भी। दिल्ली ने बताया कि आज बहुत गर्व का अनुभव कर रही हूं कि सरहद पर फौजी कामना, शुभ भावना है कि सभी सदा सलामत रहें, सुरक्षित रहें। करोड़ों इससे हमारे जवानों का उत्साह बढ़ता है।

मुंबई। महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी को परमात्म रक्षासूत्र बांधती हुई बीके शाकू एवं अन्य बीके बहनें। इस दौरान उन्होंने राज्यपाल से अमृत महोत्सव के तहत चल रही सेवाओं को लेकर भी चर्चा की।

चंढ़ीगढ़। पंजाब के राज्यपाल बीपी सिंह वाडनोर को परमात्म रक्षासूत्र बांधती हुई बीके उत्तरा। इस दौरान उन्होंने राज्यपाल से राजयोग ध्यान को लेकर चर्चा करते हुए माउंट आबू आने का भी निमंत्रण दिया।

जयपुर। राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र को परमात्म रक्षासूत्र बांधते हुए जयपुर सबजोन की निदेशिका बीके सुषमा दीदी। इस दौरान उन्होंने राज्यपाल से योग-ध्यान पर भी चर्चा की।

रायपुर। छत्तीसगढ़ की राज्यपाल सुश्री अनुसुईया ऊईके को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधती हुई इंदौर जोन की निदेशिका बीके कमला व साथ में अन्य बहनें। उन्होंने राज्यपाल से आध्यात्म पर भी चर्चा की।

हिमाचल प्रदेश। राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ अर्लेकर को बीके शकुंतला ने परमात्म रक्षासूत्र बांधा। बीके प्रकाश ने राज्यपाल को ग्लोबल समिट में पूरे राजभवन के स्टाफ के साथ आने का निमंत्रण दिया।

रांची। झारखंड के राज्यपाल रमेश बैस को परमात्म रक्षासूत्र बांधते हुए बीके निर्मला बहन। इस दौरान उन्होंने राज्यपाल के लिए माउंट आबू आने का भी निमंत्रण दिया।

हैदराबाद। आंध्रप्रदेश के राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन को परमात्म रक्षासूत्र बांधते हुए बीके शांता। इस दौरान उन्होंने राज्यपाल से राजयोग मेडिटेशन को लेकर भी चर्चा की।

अहमदाबाद। गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र भाई पटेल को राखी बांधते हुए ब्रह्माकुमारी बहनें। इस दौरान मुख्यमंत्री को साफा पहनाकर उनका अभिनंदन भी किया गया।

हिमाचल प्रदेश। मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर को बीके शकुंतला ने परमात्म रक्षासूत्र बांधा। माउंट आबू से पधारे बीके प्रकाश ने मुख्यमंत्री को ग्लोबल समिट में आने का विशेष निमंत्रण दिया।

रायपुर। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को परमात्म रक्षासूत्र बांधते हुए इंदौर जोन की जोनल निदेशिका बीके कमला। इस दौरान मुख्यमंत्री ने राखी के पावन पर्व की सभी बहनों को बधाई दी।

चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन को परमात्म रक्षासूत्र बांधते हुए बीके बीना एवं अन्य। उन्होंने मुख्यमंत्री को माउंट आबू मुख्यालय आने का भी निमंत्रण दिया।

पटना। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को परमात्म रक्षासूत्र बांधते हुए बीके संगीता। इस दौरान उन्होंने आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन को लेकर भी चर्चा की।

राखी स्पेशल

गुवाहाटी। आसाम के राज्यपाल प्रो. जगदीश मुखी को बीके बहनों ने परमात्म रक्षासूत्र बांधने के बाद उनसे माउंट आबू परिवार सहित आने का निमंत्रण दिया।

ईटानगर। अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री प्रेमा खांडू को परमात्म रक्षासूत्र बांधते हुए बीके जूनू। इस दौरान उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही सेवाओं की सराहना भी की।

काठमांडु। नेपाल की राष्ट्रपति विद्या देवी भंडारी को परमात्म रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की नेपाल सेवाकेंद्रों की निदेशिका बीके राज। इस दौरान उन्होंने राष्ट्रपति से आध्यात्म पर भी चर्चा की।

अमरावती। आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री एस जगनमोहन रेड्डी को रक्षासूत्र बांधते हुए बीके शांता एवं अन्य। इस दौरान उन्होंने मुख्यमंत्री को अमृत महोत्सव के तहत चल रही सेवाओं की भी जानकारी दी।

रांची। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को रक्षासूत्र बांधती हुई बीके निर्मला। इस दौरान उन्होंने मुख्यमंत्री को सितंबर में होने वाली ग्लोबल समिट में भी माउंट आबू पधारने का निमंत्रण भी दिया।

गुआना। गुआना के राष्ट्रपति डॉ. इरफान अली को परमात्म रक्षासूत्र बांधते हुए बीके रजनी एवं बीके अहिल्या। इस दौरान उन्होंने राष्ट्रपति से राजयोग ध्यान को लेकर भी चर्चा की।

गुवाहाटी। असम के मुख्यमंत्री हेमंता शर्मा को रक्षासूत्र बांधती हुई ब्रह्माकुमारीज़ बहनें। इस दौरान बीके बहनों ने मुख्यमंत्री को सेवाकेंद्र आने का भी निमंत्रण दिया।

जयपुर। सांसद एवं राजपरिवार जयपुर की सदस्या दीया कुमारी को राखी बांधते हुए बीके चन्द्रकला बहन और साथ में हैं बीके एकता बहन एवं बीके ग्यारसीलाल भाई।

अबोहर/पंजाब। सीमा सुरक्षा बल के सैक्टर हैडक्वार्टर में राजयोग शिक्षिका सुनीता, उपप्रभारी दर्शना ने डीआईजी वेद प्रकाश बडोला सहित अन्य अधिकारियों, जवानों को परमात्म रक्षासूत्र बांधकर जवानों को हौसला बढ़ाया।

नई दिल्ली। आजतक न्यूज़ चैनल की एचआर हेड पूर्वा मिश्रा को परमात्म रक्षासूत्र बांधते हुए बीके विजय ने परमात्म संदेश देकर मधुबन आने का न्योता दिया।

नई दिल्ली। खाद्य प्रसंस्करण केंद्रीय राज्य मंत्री प्रहलाद पटेल को परमात्म रक्षासूत्र बांधते हुए बीके विजया बहन। साथ में हैं मधुबन न्यूज़ के निदेशक बीके कोमल।

नई दिल्ली। केंद्रीय संस्कृति राज्य मंत्री व संसदीय कार्य मंत्री अर्जुन राम मेघवाल व परिजन को राखी बांधते हुए बीके शिविका, बीके विजया व साथ में हैं कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय।

मुंबई। सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता राजपाल यादव को रक्षासूत्र बांधती हुई घाटकोपर सेवाकेंद्रों की निदेशिका बीके शाकू। इस दौरान यादव ने राजयोग को लेकर भी चर्चा की।

पद्मभूषण से सम्मानित एयरोस्पेस इंजीनियर नंबी नारायणन को परमात्म रक्षासूत्र बांधते हुए बीके बहन। इस दौरान उन्हें माउंट आबू मुख्यालय आने का भी निमंत्रण दिया।

वृंदावन/उप्र। फिल्म अभिनेत्री व सांसद हेमामालिनी को परमात्म रक्षासूत्र बांधते हुए बीके रोशनी। इस दौरान उन्होंने सांसद को माउंट आबू आने का भी निमंत्रण दिया।

खुद को जाने बिना परमात्मा को नहीं जान सकते

परमात्मा का परिचय नहीं होने से उन्हें याद करते समय भागता है मन

शिव आमंत्रण, आबू रोड। हमें परमात्मा को याद करने के लिए कोई अलग समय या विधि कि आवश्यकता नहीं है, उन्हें हम चलते-फिरते कर्म करते कभी भी याद कर शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। जिस क्षण उन्हें याद करेंगे उसका स्थिति हमारी स्थिति पर आ जाएगी। जैसे ही हमारी स्थिति स्टेबल हो जाएगी हम जो कर्म करेंगे वो ऑटोमैटिक अच्छी होगी। फिर हमें शुद्ध विचार, अच्छे शब्द के लिए मेहनत और दिखावटी बिहेवियर करना नहीं पड़ेगा वो अपने आप होता जाएगा। क्यों ऐसा होता है जब हम भगवान को याद करने बैठते हैं तो मन इधर-उधर जाता है? हम सारा दिन में कितने लोगों को याद करते हैं, यहां बैठे आप अपने बच्चे को याद कर सकते हैं, फोटो सामने चाहिए? याद अपने आप आएगी, जिनके साथ हमारा रिश्ता है उनको याद करना नहीं पड़ता, उनकी याद ऑटोमैटिक ली आती है। भगवान को याद करने बैठते हैं टाइम भी निकालते हैं तैयारी भी करते हैं लेकिन याद करने बैठते हैं तो किसी और की याद आ जाती है। क्योंकि हमें उसका परिचय नहीं था। हमारा उसके साथ रिश्ता नहीं था, अब हमें उसका परिचय मिला कि जैसे हम आत्मा वैसे वो भी आत्मा है। परमात्मा मतलब जो हमारी सात क्वालिटी हैं, वे सात क्वालिटी में वो परम है।

परमधाम के निवासी हैं परमात्मा

वो कहां का रहने वाला है? परमधाम का रहने वाला है। अब जब हमें उसे याद करना है तो उसको परमधाम में और वो क्वालिटी के साथ याद करना है और उसको याद करने से पहले खुद किस स्थिति में बैठना है कि जो मैं कौन हूं? अगर आप इस भान में हैं कि आप डॉक्टर हैं तो मरीज याद आएगा। मैं आत्मा तो परमात्मा याद याद आएगा, इसलिए खुद को बिना जाने खुदा को नहीं पहचान सकते हैं।

जीवन प्रबंधन

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन
गुरुग्राम, हरियाणा

फिर परमात्मा को याद नहीं करना पड़ेगा

जब मंदिर में जाते हैं तब सबसे पहली चीज क्या करते हैं? पहले चप्पल उतारते हैं चप्पल उतारना माना चमड़ी बाहर उतारो। सभी लेदर प्रोडक्ट्स, आउटसाइड, मतलब चमड़ी, ईगो बाहर। तिलक लगाना अर्थात् मैं आत्मा। अब भगवान को याद करो। लेकिन हमने वो सारी चीजें फिजिकल में करनी शुरू कर दी। चप्पल बाहर, तिलक मस्त पर और फिर भगवान को याद करना। सबसे पहले मैं आत्मा, अब मैं आत्मा को परमात्मा को याद करना नहीं पड़ेगा, याद ऑटोमैटिक ली आएगी। जैसे परमात्मा की याद आएगी वो एनर्जी से हम जुड़ जाएंगे, हमारी स्थिति जो सात ओरिजिनल संस्कार प्ले करने शुरू हो जाएंगे। अगर हम पूजा कर रहे हैं, लेकिन उस टाइम सर्जरी को याद कर रहे हैं तो हमारी चार्जिंग नहीं हो रही। लेकिन हम सर्जरी कर रहे हैं और उस टाइम भगवान को याद कर रहे हैं तो हमारी चार्जिंग हो रही है। अब वो चार्जिंग जब होगी तो उसका बेनिफिट किसको होगा एनर्जी कहां डाउनलोड होगी? आत्मा पर डाउनलोड होगी। हमारी स्थिति कैसी हो जाएगी और जैसे ही हमारी स्थिति होगी वो एनर्जी हमारे कर्म में वाइब्रेट हो जाएगी। अब अगर परमात्मा को याद करते हुए सर्जरी कर ली तो वो सर्जरी कैसी हो जाएगी। अंतर फील होगा। सर्जरी वैसे भी परफेक्ट होती है आपकी लेकिन कभी-कभी थोड़ा सा डर आ जाता है। घबराहट के साथ तनाव क्रियेट हो जाता है। कभी कोई उलझन आ जाती है तो उस समय उन बातों का असर मन पर पड़ता है, लेकिन अगर मन भगवान के साथ कनेक्टेड है और वो एनर्जी डाउनलोडेड है, तब क्राइसिस आएगा भी तो मन की स्थिति कैसी होगी? तब हम क्या करेंगे उस एनर्जी को अपने कर्म में यूज करना शुरू कर देंगे।

बच्चे! मैं बैठा हूं मुझे यूस करो...

परमात्मा हमें मुरली में एक बहुत सुंदर लाइन कहते हैं- बच्चे! मैं बैठा हूं मुझे यूस करो। परमात्मा की शक्ति को कैसे यूज कर सकते हैं और किन-किन चीजों में यूज कर सकते हैं? आज दिन तक जब हम भगवान को याद करते थे तो या तो हम उससे अपनी जीवन की कोई छोटी बड़ी बातें मांग लेते थे क्योंकि हमें लगता था सबकुछ उसकी मर्जी से हो रहा है तो उसको कह देंगे तो वो काम हो जाएगा। अगर हम भगवान से एक नई कार मांगें क्या वो हमें दे सकता है? परमात्मा सर्वशक्तिमान है, शांति का सागर है, पवित्रता का सागर, प्यार का सागर है, लेकिन उससे हम शक्ति लेकर अपनी शक्ति को बढ़ाकर हम ऐसे काम कर सकते हैं कि फिर हम गाड़ी खरीद सकते हैं, लेकिन परमात्मा को कहना कि मेरा कर्म ठीक कर दो ये होगा नहीं। आत्मा किसने देखी है? आत्मा की ही स्थिति तो सारा दिन अनुभव कर रहे हैं। शांति, प्यार, शक्ति ये आत्मा का ही तो स्वरूप है। लेकिन आज हमारी स्थिति क्या है? तनाव, चिंता, परेशानी, निराशा ये सब आत्मा ही है। आत्मा ही ये सब महसूस कर रही है तो जैसे कि शरीर स्वस्थ होता है तो कैसा होता है और शरीर कमजोर होता है तो कैसा होता है? जब आत्मा स्वस्थ होती है तो आत्मनिर्भर होती है, लेकिन आत्मा जब कमजोर होती है तो वो छोटी-छोटी बातों में परेशान होती है। उदास होती है, हार मान जाती है। हमारे जीवन का ये लक्ष्य होना चाहिए कि हमारे हर संकल्प, बोल और कर्म में मुझे आत्मा की शक्ति केवल बढ़ती रहे। आत्मा सशक्त होती जाए, कोई ऐसा कर्म न करें जिससे आत्मा की शक्ति घटे। क्योंकि अगर आत्मा की शक्ति घटी तो बाहर सबकुछ तो पा लेंगे लेकिन खुशी और वो सुख, प्यार और शांति अभी भी ढूंढते रहेंगे क्योंकि आत्मा कमजोर हो गई है।

युवाओं को सीख लोकसभा की तर्ज पर आध्यात्मिक युवा संसद का आयोजन

सदा याद रखें- मैं यूनिक हूं, लकी हूं, ग्रेट हूं...

आध्यात्मिक युवा संसद का शुभारंभ करते अतिथिगण।

स्वर्णिम युग की पुनर्स्थापना की ओर युवाओं का आध्यात्मिक अभियान विषय पर चली संसद

शिव आमंत्रण, आबू रोड। शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग द्वारा मनमोहिनीवन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में स्वर्णिम युग की पुनर्स्थापना की ओर युवाओं का आध्यात्मिक अभियान विषय पर आध्यात्मिक युवा संसद का रविवार को जोरदार आगाज हुआ। इसमें देशभर से अलग-अलग क्षेत्रों के उच्च शिक्षित प्रोफेशनल युवा भाग लेने पहुंचे हैं। सबसे खास बात युवा संसद की कार्रवाही पूरी तरह से लोकसभा संसद की तर्ज पर की जा रही है। इसमें बाकायदा लोकसभा अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, कमेटी मेंबर, मंत्री आदि बनाकर संबंधित विषय पर पक्ष-विपक्ष की भूमिका में युवा अपने विचार रख रहे हैं। संसद में भाग लेने के लिए देशभर से 500 से अधिक युवक-युवतियां भाग लेने पहुंचे हैं।

संसद के शुभारंभ सत्र में संबोधित करते हुए ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका और युवा प्रभाग की अध्यक्षा दादी रतनमोहिनी ने कहा कि युवा ही देश के कर्णधार हैं। युवा शक्ति और ऊर्जा का केंद्र होते हैं। आप अपनी सकारात्मक ऊर्जा से विश्व को नई दिशा दे सकते हैं। आप सभी अपने जीवन में खूब तरक्की करें यही शुभकामना है।

युवा प्रभाग की उपाध्यक्षा बीके चंद्रिका ने युवाओं से आहवान करते हुए कहा कि तीन संकल्प आपके जीवन को सफलता के शिखर पर ले जाएंगे। इन्हें सदा याद रखें और इनको यूज करना सीख लिया तो जो चाहेंगे वह पा सकेंगे। पहला संकल्प है मैं लकी हूं। दूसरा संकल्प है मैं यूनिक पर्सनॉलिटी हूं। तीसरा संकल्प है मैं ग्रेट हूं। इन संकल्पों को अपने मन-मस्तिष्क में बिठा लें और इनका स्वरूप बन जाएं फिर आपको सफलता का वरन करने से कोई रोक नहीं सकता है। उन्होंने कहा कि समय, संकल्प, श्वास और संबंध को यूज करना सीख लिया तो लाइफ में सबकुछ संभव है। टाइम मैनेजमेंट जरूरी है। यदि हमारे संकल्प में एकाग्रता है तो सब संभव है। कभी अपनी श्वासों को भारी नहीं करें। संबंध बहुत बड़ी ताकत हैं। अपने सोचने में, व्यवहार में, बोलने में आपका कर्म ऐसा हो कि जो व्यवहार सामने वाला आपके साथ प्यार, स्नेह, मदद का करें आप उसके बदले में पांच फीसदी ज्यादा देकर संबंध बनाए रखें। मैं परमात्मा की शुक्रगुजार हूं कि मुझे इतना प्यारा जीवन दिया। मैं यूनिक हूं और मेरा नाम भगवान की डायरी में स्वर्ण अक्षरों में लिखा है। नेशनल को-ऑर्डिनेटर बीके कृति, दिल्ली से पधारे विश्व युवा केन्द्र के संस्थापक उदय शंकर सिंह, वरिष्ठ सदस्य बीके जीतू, हिंदू युवा वाहिनी के संस्थापक अतुल मिश्रा ने भी विचार व्यक्त किए।

तन-मन को पवित्र बनाने का संदेश देता है पावन पर्व रक्षाबंधनः राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी

शिव आमंत्रण, आबू रोड। रक्षाबंधन का पावन, पवित्र त्योहार हमें संदेश देता है कि जीवन में सदा मन और तन की स्वच्छता को निरंतर बनाए रखने पर ध्यान दें। जब हमारा मन स्वच्छ रहता है तो मानसिक विकार दूर रहते हैं। जब तन की स्वच्छता का ध्यान रखते हैं तो शारीरिक विकार अर्थात् बीमारियां दूर रहती हैं। आज हमें खुद को आसपास के नकारात्मक वातावरण से बचाए रखना जरूरी है।

उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने व्यक्त किए। मौका था रक्षाबंधन पर शांतिवन में आयोजित परमात्म रक्षासूत्र कार्यक्रम का। इस दौरान मंच पर संस्थान के सभी बीके वरिष्ठ भाई-बहनें मौजूद रहे। महासचिव बीके निर्वैर, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी, मीडिया निदेशक बीके करुणा, कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, मीडिया निदेशक बीके करुणा, डॉ. प्रताप मिड्ढा व अन्य वरिष्ठ बीके भाई-बहनें मौजूद रहे।

अव्यक्तमूर्त

दादी गुलजार (हृदयमोहिनी)
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

तपस्या मतलब अपने मन के मालिक बनना

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। दूसरों की गलती आपको फील होती है और अपनी गलती फील नहीं होती है तो अपने आपकी फीलिंग होनी चाहिए न कि दूसरे की गलती। हम कहेंगे मेरा कोई दोष नहीं था, मैंने कुछ नहीं किया, इसने ही किया लेकिन फीलिंग तो उसकी आपको आई ना! तो जब दूसरे की फीलिंग आती है तो जरूर अपने अंदर भी कुछ है, इसलिए ऐसी स्थिति अगर हमारी है बिल्कुल ही वेस्ट नहीं चले, फीलिंग नहीं आवे, चलो बात हुई, फुलस्टॉप। रांग को रांग समझना रांग नहीं है, क्योंकि हम नालेजफुल हैं ना। नॉलेजफुल होने के कारण रांग को रांग तो समझेंगे हीं लेकिन उसके पीछे हमारी भावना बदल जाए, सोचने लगें कि यह तो है ही ऐसी, यह फालतू है, इससे बात ही नहीं करनी चाहिए। भिन्न-भिन्न रूप से जो मन में एक किनारा हो जाता है, वह रांग है। तो ऐसी अपनी करेक्शन करके अपनी बुद्धि खाली करनी चाहिए। हमारी बुद्धि बिल्कुल क्लीन, क्लीयर हो। उसमें कुछ भी भरा हुआ न हो।

तपस्या का अर्थ ही है कि हम अपने मन का मालिक बनके और अपने मन को जिस स्थिति में जितना समय चाहें, वैसे अपने को एकाग्र करके टिका सके। उसको कहते हैं तपस्या। बाबा ने जो हमें शुरू में साधना सिखाई उसका प्रभाव इतना था जो साधन न होते भी कुछ फीलिंग नहीं आती थी। जो साधना की है उसका बल, ताकत अभी भी है जिससे अवस्था हलचल में नहीं आती है। मन को साधना में ऐसा बिजी रखो जो बुद्धि कहीं जाए ही नहीं।

मन का कहीं भी लगाव न हो

आप सब भाग्यवान हैं जो टाइम पर बाबा के पास पहुंच गए, अभी भी साधना करने का समय है। लेकिन जब हलचल शुरू हो जाएगी तो उस हलचल का सामना करने में भी टाइम देना पड़ेगा। उस समय अभ्यास नहीं होगा तो साधना नहीं कर सकेंगे और हलचल में टिक नहीं सकेंगे। इसलिए बाबा बार-बार भिन्न-भिन्न रूप से इशारा दे रहा है। एक तो कर्म के बंधनों को चेक करो, एकदम मैं क्लीन हूं किसी भी तरफ लगाव तो नहीं है? लगाव की निशानी ही है हमारी उस तरफ बीच-बीच में बुद्धि झुकाव में आएगी। किसी भी रूप से इसको यह करना है, इसके लिए यह करना है, इसको यह मदद करनी है। ड्यूटी आपकी है तो वह भले करो लेकिन हमारी ड्यूटी भी नहीं है, वैसे ही हमारा मन आकर्षित होता है, तो यह रांग है, इसको कहते हैं -लगाव। यह लगाव ऐसी चीज होती है जो जरूरत भी नहीं है, हमारी कोई जिम्मेवारी भी नहीं है लेकिन कोई गुण या कोई स्वभाव के प्रति उनसे आकर्षण हो जाती है। गुण के ऊपर भी आकर्षण होती है-यह बहुत अच्छा योग कराती है ऐसे-ऐसे...। यह गुण भी उसको बाबा ने ही दिया है तो जब बाबा ने उसको गुण दिया तो बाबा का गुण हुआ ना! उसका कोई स्पेशल है क्या! तो बाबा को याद करो आकर्षण बाबा में होनी चाहिए। **क्रमशः**

जब ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी ने धन लेने से किया मना

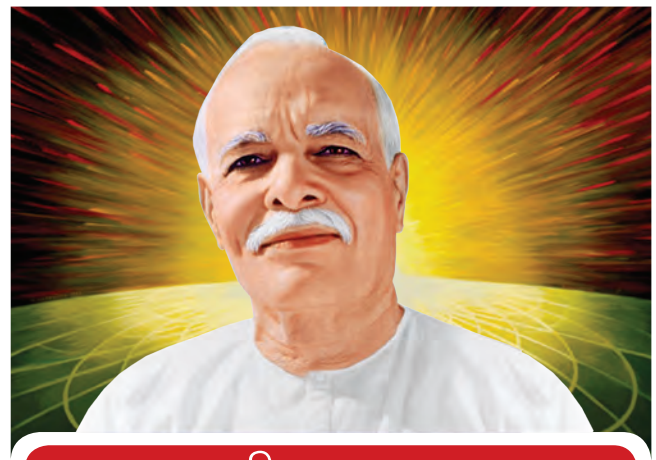

रियल लाइफ

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा
संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

'जो ईश्वरीय यज्ञ में पवित्र बनने का पुरुषार्थ करते हैं उन्हीं का धन लग सकता है'

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। अब ब्रह्मा-वत्स ईश्वरीय सेवा के लिए तैयार हो गए थे। इस सेवार्थ उन्हें ईश्वरीय ज्ञान भी काफी स्पष्ट रीति से और विस्तारपूर्वक मिल चुका था। संयोग-वश अपने-अपने मित्र-सम्बन्धियों से उनका पत्र-व्यवहार भी इस तरह हो रहा था कि जिससे उनकी भी ज्ञान सेवा की जा सके। अब लौकिक मित्रों संबंधियों से अनेक यज्ञ-वत्सों को, उनके यहां जाकर उन्हें ज्ञान-लाभ देने के लिए, निमंत्रण प्राप्त हुए। अतः इन ब्रह्मा-वत्सों का अलौकिक सेवार्थ विभिन्न नगरों में जाना हुआ।

सन् 1952 की बात है कि ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी अहमदाबाद में एक व्यक्ति के निमंत्रण पर वहां ईश्वरीय ज्ञान देने के लिए गईं। वह व्यक्ति पहले आबू में भी आए थे। वहां जब उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान सुना तो उन्हें बहुत आनंद आया। आत्मिक सुख अनुभव करने के कारण उन्होंने स्वेच्छा से एक लिफाफे में कुछ नोट डालकर यज्ञ में भेंट किए। परन्तु ब्रह्माकुमारी बहनों ने कहा- हम किसी से भी आर्थिक सेवा नहीं ले सकतीं। इस पवित्र ईश्वरीय यज्ञ में उसी का धन कार्य में लग सकता है जो इस ईश्वरीय ज्ञान को प्रैक्टिकल जीवन में धारण कर मनसा-वाचा-कर्मणा पवित्र बनने का पुरुषार्थ करते हैं। आपने अभी हमसे ज्ञान सेवा पूरी तरह ली ही नहीं है, न इसके नियमों को अपने जीवन में अपना कर जीवन को निर्विकार बनाने का पुरुषार्थ प्रारंभ किया है। अतः हमें जो ईश्वरीय आज्ञा है, उसके अनुसार हम आप द्वारा यह धन स्वीकार करने में असमर्थ हैं।

ब्रह्माकुमारी बहनों ने उस व्यक्ति को यज्ञ-प्रसाद भी दिया था और ज्ञान-चर्चा द्वारा पवित्रता के लिए प्रेरणा भी दी थी। जब उस व्यक्ति ने ब्रह्माकुमारी बहनों की इस बात को सुना कि वे आर्थिक सेवा स्वीकार नहीं कर सकतीं तो उन्हें बहुत अचंभा हुआ। उन्होंने मन में सोचा कि आज के जमाने में कौन व्यक्ति है जिसे पैसा प्यारा नहीं लगता। हम साधुओं और महात्माओं को धन देते हैं, तब वे तो उसे झट स्वीकार कर लेते हैं और धन प्राप्त करके उन्हें हर्ष होता है। परन्तु मैंने जीवन में पहली बार एक ऐसा धार्मिक स्थान और ऐसी बहनें देखी हैं जो कहती हैं कि हम धन स्वीकार करने में असमर्थ हैं! सचमुच इनका मन अनासक्त है। इनके जीवन में त्याग है। इन्होंने कुछ असूल अपनाएं हैं। ये बहुत ही उच्च आत्माएं हैं। वह ज्ञान-चर्चा और प्रैक्टीकल जीवन से प्रभावित होकर जब अहमदाबाद लौटे तो वहां से उन्होंने धन्यवाद का एक पत्र और अहमदाबाद में आने का निमंत्रण पत्र लिखकर भेजा। उसी निमंत्रण को स्वीकार करके ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी अहमदाबाद गईं थीं।

और देहली जाकर सेवा की योजना बनाई

इसके शीघ्र ही बाद ब्रह्माकुमारी दीदी मनमोहिनी जी और रुक्मिणी जी अपने लौकिक मित्र-संबंधियों के निमंत्रण पर कुंडला गईं थीं और वहां से लौटते समय उन्होंने देहली जाकर ईश्वरीय सेवा करने की योजना बनाई थी। ब्रह्माकुमारी संतरी, सती और प्रकाशमणि जी और ब्रह्माकुमार आनंद किशोर तथा चन्द्रहास कलकत्ता में भी संबंधियों के निमंत्रण पर गए थे। ब्रह्माकुमारी मनोहर इन्द्रा तथा गंगा को देहली से निमंत्रण मिला था। ब्रह्माकुमारी कमल सुन्दरी जी का पूना में सेवार्थ जाना हुआ था। इस प्रकार कोई यज्ञ वत्स पूर्व में, कोई पश्चिम में, कोई उत्तर में और कोई दक्षिण में जाकर ईश्वरीय सेवा में तत्पर हो गए थे। चौदह वर्ष ज्ञान यज्ञ के कुंड के भीतर योग-तपस्या करने के बाद बाहर लोगों के यहां जाने का उनका यह पहला अनुभव बड़ा अजीब-सा था।

शरीर छोड़ने के समय तक इनका कार्य क्षेत्र प्रायः बंबई ही रहा। 14 वर्ष के बाद यज्ञ-कुंड से बाहर निकलने का अजीब अनुभव...

इस बारे में ब्रह्माकुमारी कमल सुन्दरी जी, जोकि वर्तमान समय मेरठ में ईश्वरीय सेवा पर उपस्थित हैं, लिखती हैं क्या बताऊं, सारे कल्प में वर्तमान जीवन एक बहुत ही अजीब जीवन हैं। मैंने इस जीवन में चार बार जन्म लिए। एक जन्म तो जैसे सभी का होता है, वैसे लिया ही। इस जन्म से मेरा अभिप्राय है -शारीरिक जन्म लेना। इसके बाद माता-पिता ने लालन-पालन करके बड़ा किया और फिर विवाह कर दिया। इसे मैं अपना दूसरा जन्म मानती हूं क्योंकि कन्या के लिए विवाह एक घर से मरकर दूसरे घर में जन्म लेने के समान होता है।

शक्तिपुंज

दादी जानकी
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

लक्ष्य रखें- हमारी वाणी से ऐसे शब्द निकलें जैसे मोती निकलते हैं

अपनी उन्नति करनी है तो अपने लिए कुछ विधि-विधान बनाओ और जीवन में उसी प्रमाण चलो

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। माया या विघ्न तब आते हैं जब कोई द्वार खोल देते हो तो उसको आने का चांस मिल जाता है। विघ्नों को भी आने का चांस मिलता है। वैसे सदा निर्विघ्न स्थिति में रह सकते हैं, सिर्फ संभालना है, सावधान रहना है। विघ्न विनाशक रहना है। विश्वभर में जो सेवाएं हो रही हैं, साथी और सब निर्विघ्न स्थिति में रहें तो सफलता अपने आप छम-छम करके आती है। सिर्फ हमको प्रसन्न और संतुष्ट रहना है। बाप से, पढ़ाई से प्यार है तो सफलता साथ देती है। सेवा में सच्ची भावना है, कभी मान-अपमान के पिंजरे में फंसते नहीं है तो सफलता साथ देती है। लेकिन हमारी वृत्ति और वाणी ऐसी हो और वायब्रेशन ऐसे श्रेष्ठ हों तो वह वायब्रेशन भी सफलता लाने में बहुत मदद करती है। अपने को कभी भी ढीला नहीं छोड़ना है। वाणी से ऐसे शब्द निकलें जैसे मोती निकलते हैं। अभी इतना ध्यान रखना पड़े। संकल्प ऐसे हों जो अंदर ही अंदर काम करें। हमारे पुरुषार्थ में सच्चाई हो। दिल से, प्यार से, अपनी स्थिति को अच्छा जमाने का ध्यान हो तो बाकी सब कामों में बाबा अपनी शक्ति विल कर देता है। तो हम अपनी स्थिति ऐसी बनाएं तो बाबा अपना काम आपेही कर रहा है, करा रहा है, होना है, जरूर और अब होना है। अपनी उन्नति करनी है तो अपने लिए कुछ विधि-विधान बनाओ और उसी प्रमाण चलो। साकार में बाबा ने हम सबमें यह आदत डाली है कि मुरली के बाद फौरन कारोबार में नहीं जाना है। कुछ समय 10-15 मिनट मुरली पर मनन-चिंतन करना है। बाबा के अव्यक्त होने के बाद जब पहले-पहले भट्टियां हुईं थी तो मुझे याद है हमने कहा था अमृतवेला 4 बजे से 8 बजे तक यह चार घंटा हमें अपनी उन्नति के लिए मिलता है। इसमें कोई बहाना नहीं दे सकते हैं। अमृतवाले 4 बजे से 8 बजे तक हरेक के पास अपने लिए टाइम है। तो अपनी उन्नति के लिए क्या विधि-विधान बनाने हैं। सारी जवाबदारी बाप को दे दो, अपने सिर से बोझ उतार दो। हमें सिर भारी करने की आवश्यकता ही नहीं है।

विकर्म विनाश हुए तो हल्कापन महसूस होगा

दिल से सेवा करें, दिल से बाबा को याद करें तो हल्कापन महसूस होगा। दिल से एक दो के साथ फ्री होकर रहें। अपने पुरुषार्थ के लिए दिल साफ हो दिल साफ होने से साहिब राजी है, हल्के हो जाते हैं। चिंतन से फ्री हो करके निश्चिंत रहते हैं। तो बाबा अपनी जवाबदारी अच्छी संभालता है। हम संभाल नहीं सकते हैं। पहले हम अपनी स्व-उन्नति के लिए प्रयास तो करें। जो हमारा कोई भी पास्ट का हिसाब-किताब रह नहीं जाए। कईयों के शरीर का कर्मभोग भी खत्म नहीं होता है, कारण, पुराने विकर्म विनाश नहीं हुए हैं। हमारे विकर्म विनाश हुए हैं उसकी निशानी क्या है? उसका सबूत क्या है? विकर्म विनाश हुए तो हल्कापन महसूस होगा। पवित्रता का बल मेरे पास जमा होगा। फिर हमें कोई विकल्प आ नहीं सकता।

कल्पतरुह अभियान] प्रकृति को बचाने की दिशा में ब्रह्माकुमारीज़ की अनोखी पहल

पांच लाख पौधारोपण के साथ बनाया नया कीर्तिमान

बीके भाई-बहनों में अभियान को लेकर जोरदार उत्साह

छतरपुर, मध्यप्रदेश: 300 गमलों में एक साथ लगाए पौधे। प्रत्येक पौधे को दिया यूनिक नाम

मुझे विश्वास है कि कल्पतरुह परियोजना न केवल पूरे देश में हरित आवरण को बढ़ाने में मदद करेगी, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने और स्थिरता को बढ़ाने में भी योगदान देगी। कल्पतरुह परियोजना के एक भाग के रूप में पौधरोपण इस संदर्भ में अधिक प्रासंगिकता रखता है। इस पहल की सभी सफलता के लिए शुभकामनाएं।

– **नरेंद्र मोदी,** प्रधानमंत्री

15+
देशों में कल्पतरुह अभियान जारी

558+
जिलों को किया गया कवर

2570+
स्थानों पर किया गया पौधारोपण

» **शिव आमंत्रण, आबू रोड।** ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा चलाए जा रहे कल्पतरुह अभियान का उत्साह चरम पर है। गांव से लेकर शहर में पौधारोपण को लेकर बीके भाई-बहनों में जोरदार उमंग-उत्साह का माहौल बना हुआ है। 5 जून 2022 को शुरू हुए इस अभियान में अब तक पांच लाख पौधे लगाए जा चुके हैं। प्रत्येक पौधे के लिए एक यूनिक नाम देने के साथ उसकी लोकेशन एप पर अपलोड की जा रही है। जिसकी बाकायदा निगरानी भी की जा रही है।

रतलाम, मध्यप्रदेश

कल्पतरुह परियोजना एक व्यक्ति-एक पौधा के आदर्श वाक्य के साथ शुरू की गई है। जिसका उद्देश्य है कि 40 लाख लोगों द्वारा 40 लाख पौधे लगाना है। वास्तव में यह परियोजना प्रकृति मां के लिए एक सुंदर उपहार है। आज दुनिया के सभी हिस्सों में जंगल और प्राकृतिक संसाधनों को जित गति से बड़े पैमाने पर दोहन किया जा रहा है, ऐसे में एक साथ इतने पौधे लगाना समाज के लिए अनुकरणीय पहल है।

– **हिमंत बिश्व सरमा,** मुख्यमंत्री, आसाम

कल्पतरुह प्रोजेक्ट के तहत पौधारोपण और उनकी देखभाल के लिए प्रेरित करने की पहल सराहनीय है। पौधों की देखभाल करने से जनमानस में करुणा, सहनशीलता, नम्रता, प्रेम और शांति जैसे आध्यात्मिक मूल्यों की वृद्धि होगी। आशा है कल्पतरुह प्रोजेक्ट पर्यावरण सुधार प्रयासों और संयुक्त राष्ट्र संघ के सतत् विकास लक्ष्य की प्राप्ति में सहयोगी होगा।

– **मंगूभाई पटेल,** राज्यपाल, मप्र

मुझे विश्वास है कि कल्पतरुह जैसी परियोजना भारत को 2030 तक भूमिक्षरण, तटस्थता और 26 मिलियन हेक्टेयर खराब भूमि की बहाली में मदद करेगी। प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना, महिलाओं की अधिक भागीदारी और नेतृत्व को प्रोत्साहित करना, सोशल मीडिया और मोबाइल प्रौद्योगिकी द्वारा प्रदान किए गए अवसरों का उपयोग करना और लाना। तत्कालीन पर्यावरण के उन्नयन के प्रति हमारी प्रतिक्रिया में अधिक सामंजस्य के बारे में सर्वोपरि है।

– **बंडारु दत्तात्रेय,** राज्यपाल, हरियाणा

एक व्यक्ति, एक ग्रह, एक पौधा के सिद्धांत का पालन करते हुए 75 दिन के भीतर 40 लाख लोगों के माध्यम से 40 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य प्रशंसनीय है। पौधारोपण करने से सभी व्यक्तियों में पर्यावरण की सुरक्षा के साथ-साथ करुणा, सहनशीलता, नम्रता, प्रेम और शांति के मूल्यों का विकास हो सकेगा। ब्रह्माकुमारीज़ को कल्पतरुह परियोजना में सफलता की कामना करता हूं।

– **बनवारीलाल पुरोहित,** राज्यपाल, पंजाब और प्रशासक, चंडीगढ़, केंद्र शासित प्रदेश

बीकानेर, राजस्थान

इंदौर, मध्यप्रदेश

सोलार प्लांट, आबू रोड

जीजीआरसी, अहमदाबाद

ज्योतिर्मठ, उत्तराखंड

बैंगलुरु, कर्नाटक

किंग्सवे कैंप, (दिल्ली)

दार्जिलिंग, (प.बं.)

ब्रह्माकुमारीज द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण अभियान शुरू करना बहुत सराहनीय कार्य है। यह हमें ओनली वन अर्थ के लिए प्रोत्साहित करता है। हमें जागरूक होने की आवश्यकता है कि पृथ्वी ही एकमात्र रहने योग्य ग्रह है। इसलिए हमें प्रकृति और लोगों के बीच सामंजस्य सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। अधिक से अधिक पेड़ लगाना और उनकी देखभाल करना हमारी पृथ्वी की रक्षा के लिए जरूरी है।

– **पेमा खांडू,** मुख्यमंत्री, अरुणाचल प्रदेश

मुझे विश्वास है कि पर्यावरणीय कार्यों और मूल्यनिष्ठ जीवन शैली को बढ़ावा देने के ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के प्रयास सफल होंगे। आप प्रत्येक नागरिक को उनकी आध्यात्मिक, सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारी से अवगत कराएंगे। कल्पतरुह परियोजना की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएं। इस अभियान से लोगों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना जागेगी।

– **चोवना मेन,** उपमुख्यमंत्री, अरुणाचल प्रदेश

बहुत खुशी है कि ब्रह्माकुमारीज़ अमृत महोत्सव के तहत कल्पतरुह अभियान चला रही है। इसके पीछे मकसद है कि जमीन को हराभरा करने और लोगों में पर्यावरण संरक्षण को लेकर जागरुकता का माहौल बनाना। 75 दिन के भीतर 40 लाख पौधे लगाने को जो लक्ष्य रखा है वह बहुत ही प्रशंसनीय है।

– **एके शशिंद्रन,** वन और वन्यजीव संरक्षण मंत्री, केरल सरकार

अपने नकली नकाब को त्याग असली नकाब धारण करो

समस्या समाधान

ब्र.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

पिछले अंक से क्रमशः

ये मंत्र बना लो कि मैं बहुत भाग्यवान आत्मा हूं...

हमें हमेशा स्वमान के नशे में रहना होगा। मेरे साथ स्वयं भगवान है, मैं उससे कुछ भी बातें कर सकती, उसका एक सुंदर रिस्पॉन्स मेरे पास आएगा। अगर योग युक्त अच्छे से होंगे, शिव बाबा से बात करते रहेंगे तो कभी भी न मन उदास होगा, न अकेलापन भासेगा। अपने अंदर गुणों को बहुत बढ़ाते चलें। कुमारी जीवन में भी हमें अपने साथ कुछ गुण लेके चलना है। जैसे जीवन में दृढ़ता हो, बहुत ज्यादा निर्भयता हो, अपने सत्यता की शक्ति में विश्वास हो। जो मिले उसमें संतुष्ट रहना। जो कुछ मिल रहा है उस पर पूर्ण संतुष्ट, तो सबकुछ अच्छा-अच्छा मिलने लगेगा बहुत खुश रहना सीखें, बहुत महान बनें, बहुत हल्के बनें, बहुत स्ट्रांग बन जाएं। आप सफलता के साथ गीत गाते हुए बाबा के साथ इस महान कार्य को संपन्न करेंगी। बाबा ने हम सभी के मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीरें खींच दी हैं। दिखाई देती हैं सबको? खींची हुई है। हम बाबा के पास जिस क्षण आए, तभी सोया हुआ भाग्य तो जग गया था। अब भाग्य आगे बढ़ा रहे हैं दिनोंदिन। ये मंत्र बना लो मैं बहुत-बहुत भाग्यवान हूं। अगर मनुष्य इसी स्मृति में रहने लगे कि मैं पदमापदम भाग्यवान हूं तो अनेक समस्याएं खत्म होने लगेंगी।

हम बात को सोच-सोचकर बड़ा बना देते हैं

मनुष्य परेशान क्यों है, क्योंकि सोचते ज्यादा हैं। बात छोटी सी होती है, परेशानी ज़्यादा है। सोच-सोचकर इसलिए हमें अपनी सोच को ठीक करने के लिए मुरलियों की बातों पर बहुत ध्यान देना चाहिए। कौन-कौन सा भाग्य हमें प्राप्त है, कौन-कौन सा भाग्य मिलने जा रहा है, क्या पूरे ही कल्प हम बहुत भाग्यवान रहे हैं? भाग्यवान मनुष्य की पहचान आप देखो किसी व्यक्ति को बहुत लोग कहेंगे बड़ा भाग्यवान है। उस व्यक्ति को जो खुशी हैं, संपन्नता है, संतुष्टता है, सबकुछ सहज मिलता है। कई लोग मेहनत करते हैं मिलता ही नहीं और कई लोगों को सब कुछ सहज मिल जाता है। भाग्यवान वो है जिसका परिवार सुखी, बच्चे चरित्रवान हैं।

बाबा हमारे जीवन में समां गया है

पहला भाग्य जो किसी को नहीं मिलता, द्वापर से किसी को क्षणिक दर्शन तो हुए होंगे, साक्षात्कार करा देता है बाबा वो भी ज्योति का साक्षात्कार उससे तो भक्तों को संतुष्टि नहीं होती। किसी को विष्णु के हुए, महादेव के हुए, श्रीकृष्ण के हुए फिर अनेक शिव शक्तियों के हुए ये सब होते रहे। हमारा डायरेक्ट कनेक्शन हो गया, केवल वो हमें मिला ही नहीं, हमारा होकर हमें मिल रहा है। हमारे जीवन में समा गया है। हमारा साथी बन गया। जब संसार को ये पता चलेगा सोचो क्या होगा? लोग सब जगह जाना छोड़ आपके ही चरणों में लेट जाएंगे। आपके चरण धोकर पीने लगेंगे। ज्ञान सरोवर, पांडव भवन, शान्तिवन तो बाद में यह स्थान महान तीर्थ बन जाएंगे। यह श्रेष्ठ वाइब्रेशन ऐसे अनुभव होंगे लोगों को, यहां का पानी पीया रोग ठीक हो गए, मिट्टी ले गए मस्तक पे लगा ली ठीक हो गया। यह सबकुछ तो ये सुंदर समय अब हमारे सामने आ रहा है।

हमें श्रेष्ठ भाग्य मिला, श्रेष्ठ ज्ञान मिला

दूसरा श्रेष्ठ भाग्य मिला है श्रेष्ठ ज्ञान। इसकी भी तो द्वापर से हमें तलाश थी। ऋषियों ने ग्रंथ लिखे, वेद लिखी पर सत्य ज्ञान की खोज बनी ही रही। बहुत कुछ लिखा गया। लोगों ने यह भी मान लिया कि इन ग्रंथों में संपूर्ण ज्ञान है। ये भगवान की ओर से फरिश्तों की ओर से आए हैं लेकिन संपूर्ण ज्ञान की फिर भी खोज रही। अगर संपूर्ण ज्ञान मनुष्यों को मिल गया होता तो क्या होता? एक तो खोज न होती, रोज ये गायन न होता मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो। मुझे ज्ञान का तीसरा नेत्र प्रदान करो। हे प्रभु मुझे राह दिखाओ। ये सब नहीं होता। यह कोई कम भाग्य है। संपूर्ण सत्य को हमने जान लिया, जीवन रोशन हो गया है। जीवन की राहें मिल गई हैं।

सहन तभी कर सकते हैं जब सामने वाले के प्रति स्नेह, प्यार और क्षमा भाव हो

स्व-प्रबंधन

बीके ऊषा
स्व-प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

दूसरों को झुकाने का आधार भी हमारी सहन शक्ति है। सहन शक्ति के अभाव में आता है क्रोध

एक बार महात्मा बुद्ध एक वृक्ष के नीचे बैठे थे और एक व्यक्ति आकर उन्हें खूब गालियां देने लगा। एक घंटे तक गालियां देता रहा, लेकिन महात्मा बुद्ध शांति में बैठे रहे। एक घंटे के बाद उस व्यक्ति ने महात्मा बुद्ध से पूछा कि आपने सुना मैंने क्या कहा, तब महात्मा बुद्ध ने कहा भाई अगर आपको मैं कोई चीज दूं लेकिन वह चीज आपके कोई काम की न हो और आप उसे स्वीकार न करो तो किसके पास रहेगी, उस व्यक्ति ने कहा वह तो मेरे पास ही रहेगी। तब महात्मा बुद्ध ने कहा कि आपने भी मुझे जो एक घंटा दिया, वह एक भी बात मेरे काम की नहीं थी। इसलिए मैंने उसे स्वीकार नहीं किया है। जब उस व्यक्ति को यह महसूस हुआ कि अगर इन्होंने मेरी दी हुई एक भी गाली स्वीकार नहीं की तो उसका मतलब यह हुआ कि यह सारी गालियां मेरे पास ही रहीं। मानों मैं अपने आप को ही गाली दे रहा था। वह व्यक्ति शर्मिंदा हो गया और झुक गया और महात्मा बुद्ध का अनन्य शिष्य बन गया।

कहने का भाव है कि दूसरों को झुकाने का आधार भी हमारी सहन शक्ति है। व्यक्ति सहन तभी कर सकता है जब उसके मन में सामने वाले के प्रति स्नेह-प्यार हो और क्षमा भाव हो। महात्मा बुद्ध के मन में मानवता के प्रति प्यार था और क्षमा भाव था। परन्तु जब व्यक्ति के पास सहन करने की शक्ति नहीं होती है तो उसे क्रोध आ जाता है। यानी वह क्रोध रूपी कमज़ोरी का शिकार हो जाता है। कई बार लोग कहते हैं कि कोई कब तक सहन करे? आखिर सहन करने की भी हद तो होती है ना। कोई बार-बार गलती करता जाए और हम सहन करते ही रहें। फिर भी दस बार तो माफ कर देते लेकिन जब 11 वीं बार भी वहीं गलती करेगा फिर तो गुस्सा आएगा ही ना।

लेकिन सोचने की बात है कि दस बार जो आपने सहन किया वह आप ही जानते हो और 11 वीं बार जो गुस्सा किया वह दस लोग देखते हैं, तो वे यही सोचेंगे कि इतनी छोटी सी बात भी आप सहन नहीं कर सके। उनको थोड़े ही पता था कि आप दस बार सहन कर चुके हैं तो 11वीं बार का गुस्सा करना यह आपके शील पर एक दाग लगा देता। लोग यही कहते हैं इसमें सहन करने की शक्ति नहीं, छोटी सी बात को लेकर कितना गुस्सा करते हैं। इसलिए सहन करने की कोई हद या सीमा नहीं होती।

सहन करता है जिसके जीवन में अच्छाइयों रूपी फल हों

प्रकृति से भी यह बात सीख सकते हैं- जैसे फलों से लदा पेड़ सदा झुका हुआ होता है और अपनी शीतलता की छांव सब राहगीरों को देता है। जब बच्चे आते हैं और वह फल प्राप्त करने के लिए पत्थर मारते हैं, एक-एक पत्थर को सहकर भी वह पेड़ मीठे फल ही देता है। याद रखने वाली बात यह है कि जिस पेड़ पर फल होगा उसे ही पत्थर सहन करने पड़ते हैं, जिस पेड़ पर फल ही न हों उसे कौन पत्थर मारने जाएगा। ऐसे ही संसार में उसी व्यक्ति को सहन करना पड़ता जिनके जीवन में अच्छाइयों रूपी फल हों। लोगों को भी आपकी अच्छाई रूपी फल चाहिए तभी तो वह गाली रूपी पत्थर मारते हैं जिसके जीवन में कोई अच्छाई ही न हो उनको कोई कुछ कहने भी नहीं जाता है।

मैं समाधान स्वरूप हूं, सबका समाधान मेरे पास है

आध्यात्म की उड़ान

डॉ. सचिन
मेडिटेशन एक्सपर्ट

दिनभर परमात्मा से संवाद रहे जारी, रोज करें अपनी चेकिंग

सारे दिनभर में हमारे शब्द, हमारे बोल, हमारे व्यवहार ऐसे तो नहीं की जिससे आस-पास वाले घायल हो जाएं, दुखी हो जाएं। किसी पुरुषार्थी आत्मा को नीचे गिरा देना ये बहुत बड़ा विकर्म है, जो आत्मा उड़ रही थीं उसको तीर मार देना और उसे गिरा देना यह भी बड़ा सूक्ष्म विकर्म है। हमारे वजह से कोई दुखी न हो, कोई नाराज न हो। किसी को खुश करने के लिए अगर श्रीमत तोड़नी पड़ती है तो शायद वो व्यक्ति भी वास्तविक रूप से कभी खुश नहीं रह सकेगा और हमें भी दुखी ही होना पड़ेगा।

सारे दिन योग का चार्ट चैक करें: रोज अपना चार्ट चैक करें कि सारे दिनभर योग में कितना रहे, दिनभर वियोग रहा या योग रहा। अमृतवेला योग किया बहुत अच्छा, मुरली सुनी-सुनाई बहुत अच्छा, नुमाशाम का योग किया, रात्रि क्लास किया परंतु दिनचर्या में जो योग का लिंक हैं कड़ी है वो ना टूटे उसके लिए कुछ विधि बनानी हैं और विधि है पहला बीच-बीच में शरीर से अलग हो जाना। दूसरा बाबा के पास पहुंच जाना- वरदान लेना और तुरंत नीचे आ जाना। ये सारे छोटे-छोटे कार्य हैं ऊपर पहुंच जाना, बाबा के पास पहुंच गए, हाथ उसने सिर पर रख दिया वरदान ले लिए और फिर नीचे, तीसरा उसके पास पहुंच जाना थोड़ी सी बात करना- वापस आ जाना। उससे संवाद साधना, अगला उसके पास पहुंच जाना, दृष्टि लेना और नीचे वापस आना छोटा सा अभ्यास है, क्योंकि व्यस्तता सबकी बहुत है। सेवाओं में सभी लगे हैं बीच-बीच में बाबा के पास पहुंच जाना, दृष्टि लेना पवित्रता की दृष्टि और वापस आ जाना। कभी-कभी बीच में फिर ऊपर चले जाना परमधाम का अनुभव करके आना। परमधाम की शांति कैसी है परमधाम का मौन कैसा है। परमधाम की मुक्ति कैसी है परमधाम का वो तत्व कैसा है।

मैं समाधान स्वरूप हूं

पांच तत्व तो यहां के देख लिए यहां के तत्वों का अनुभव परंतु वो जो पांच तत्वों से ऊपर का तत्व है उस तत्व का क्या अनुभव है? उसके बाद बीच-बीच में अचानक फरिश्ता बनना फिर आ जाना है, उसके बाद फिर से बाबा के पास पहुंच जाना धन्यवाद कहना और नीचे आ जाना। धन्यवाद किसलिए? क्या-क्या तूने दे दिया, क्या-क्या तुझसे पा लिए, शिकायतों का पिटारा बंद और तूने जो दिया तुझसे जो मिला और किसी को ना मिला, हमको मिला। कभी ऊपर जाना उससे हाथ मिलाकर आ जाना, सब ठीक ठाक है। उधर पूछ के वापस और उसको कहना- यहां सबकुछ ठीक चल रहा है, कोई भी समस्या नहीं। मैं समाधान स्वरूप हूं। संसार के हर प्रश्न का उत्तर मेरे पास है। जीवन की हर समस्या का समाधान मेरे पास है। मैं स्वयं समाधान हूं। कभी ऊपर जाना शक्तियां अपने अंदर भरना और आ जाना। कभी ऊपर जाना सारे गुण अपने अंदर भरना और आ जाना। कभी अनुभव करना कि मैं आत्मा यात्रा पर हूं। कभी मधुबन, कभी ब्राह्मण परिवार कभी सारे सेवाकेन्द्र की परिक्रमा करना।

इन सात अभ्यासों को करें शामिल

दृष्टि निर्विकार रही या नहीं रही। जिनकी विकारी दृष्टि होती है उनको क्या हो जाता है, लंगड़े बन जाते हैं और क्या बन जाते हैं बंदर बन जाते हैं। हमारी दृष्टि शुद्ध हो जाए, पवित्र हो जाए, दृष्टि से विकार हट जाए। कुमार-कुमारियों की भी दृष्टि विकारी बन जाती है। मस्तक मनी को देखते रहो। बहन-भाई को देखें नौ प्रकार की दृष्टि भाई-बहन को देखें नौ प्रकार की दृष्टि...

1. सबसे पहले भाई-बहन को देखें तो ये संकल्प करें-

- पहला: संकल्प ये परमधाम से अवतरित आत्मा है, अभी-अभी आई है।
- दूसरा: ये बहन है।
- तीसरा: ये भाई है, आत्मा भाई-भाई है।
- चौथा: ये सतयुग की देवी है।
- पांचवां: ये द्वापर में मंदिरों में जिसकी पूजा हो रही है, साक्षात् दुर्गा है, काली है, संतोषी है, वैष्णवी है तो ये रूप में देखना।
- छठां: ये ब्रह्माकुमारी है, ब्रह्माकुमारी अर्थात् सौ ब्राह्मणों से उत्तम, उसके बाद ये बाल ब्रह्मचारिणी है, उसके बाद ये मां है, माता के दृष्टि में कभी विकार नहीं हो सकते।
- सातवां: ये बहन फरिश्ता है।

2). बहन, भाई को देखे तो यह संकल्प करें-

- पहला: ये परमधाम से अवतरित आत्मा है, अभी-अभी आई है।
- दूसरा: ये आत्मा भाई है।
- तीसरा: ये पूर्वज आत्मा है।
- चौथा: सतयुग का नारायण है, द्वापर का गणेश है। विघ्न विनाशक संकट मोचन हनुमान, शंकर, तपस्वी है।
- पांचवा: ये ब्रह्माकुमार है। ब्रह्माकुमार अर्थात् सात सौ ब्राह्मणों से उत्तम।
- छटवां: ये बाल ब्रह्मचारी है।
- सातवां: ये फरिश्ता है।

हमारी परिस्थितियों के लिए जिम्मेदार हैं विचार

साइंटिस्ट, इंजीनियरिंग विंग: अनिश्चितताओं का मुकाबला विषय पर नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित

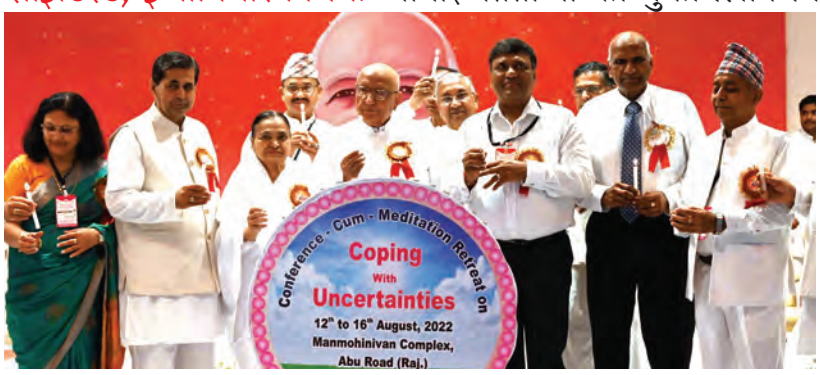

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के साइंटिस्ट, इंजीनियरिंग एवं ऑर्किटेक्ट विंग की ओर से चार दिनी नेशनल कॉन्फ्रेंस कम मेडिटेशन रिट्रीट का आयोजन मनमोहिनीवन परिसर में किया जा रहा है। अनिश्चितताओं का मुकाबला विषय पर आयोजित कॉन्फ्रेंस ऋषिकेश से पधारे टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के चैयरमैन एवं एमडी आरके विश्नोई ने कहा कि परिस्थितियां हमारी स्थिति पर डिपेंड करती हैं। हमारी सभी परिस्थितियों के लिए सबसे ज्यादा हमारे विचार जिम्मेवार हैं। हमारा पहनावा यह तय नहीं करता कि अभी हम अच्छे या कितने बुरे हैं। परिस्थिति में हमारी मन की स्थिति है तय करती है कि हम कितने वर्तमान समय ठीक हैं या गलत हैं। आध्यात्मिकता और प्रोफेशन हमारे जीवन की कड़ी हैं। मेरे जीवन में आध्यात्मिकता के समावेश विचार क्रांति आई और जीवन सरल और सहज बन गया।

काठमांडू नेपाल से पधारे डॉ. गोविंद पोखरेल ने कहा कि हम इस सृष्टि में अकेले हैं जो हमारे जैसा और दूसरा कोई नहीं है। हम जब इस धरती पर पैदा हुए तब ऑलमाइटी ने हमें दो कारणों से धरती पर भेजा एक ज्ञान बांटने के लिए, दूसरा एनर्जी लेनदेन के लिए। हम सभी इस सृष्टि के एक अजूबा ही हैं। एक-दूसरे से बिल्कुल भी अलग-अलग हैं।

नेपाल के जल संसाधन मंत्रालय के पूर्व डायरेक्टर जनरल बिनोद कुमार अग्रवाल ने कहा कि 2015 में नेपाल में बड़ा भूकंप आया था। उस समय मैं पांचवें फ्लोर के तले में था। उस भूकंप से मैं इतना डरा हुआ था कि 3 दिन तक गाड़ी में ही रात गुजारी। महीनों तक हमारे बेड में लगता था कि भूकंप जारी है। बाद में फिर मैंने ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र पर जाकर सात दिन का राजयोग मेडिटेशन कोर्स किया। आध्यात्मिक ज्ञान, सृष्टि चक्र के ज्ञान और ड्रॉमा का सच्चा ज्ञान मिलने के बाद जीवन में फिर कोई आपदा आई तो मन बिल्कुल भी विचलित नहीं हुआ। इसके बाद कई भूकंप आए लेकिन मैंने उसको धरती मां का झूला समझ कर एंजॉय किया। एडिशनल चीफ राजयोगिनी जयंती दीदी ने ऑनलाइन संबोधित किया।

यूएसए से आए इंजीनियर रामप्रकाश, अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, विंग के अध्यक्ष बीके मोहन सिंघल, नेशनल को-ऑर्डिनेटर भारत भूषण, जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके पीयूष ने भी संबोधित किया। बीके माधुरी बहन ने मंच संचालन किया।

दिल्ली सरकार ने पाठ्यक्रम में जोड़ा हैप्पीनैस

शिव आमंत्रण, दिल्ली। दिल्ली सरकार की ओर से स्कूली विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम में हैप्पीनेस को सिलेबस में जोड़ा गया है। इस उपलक्ष्य में मेगा इवेंट आयोजित किया गया। जिसमें मुख्यवक्ता के तौर पर मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी को आमंत्रित किया गया। मंच पर मौजूद दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल, उपमुख्यमंत्री मनीष सिसौदिया।

युवा दिवस — यात्रा से दिया देशभक्ति का संदेश, रास्ते में किया स्वागत

108 राजयोगी बाइकर्स ने आबू रोड से पालनपुर के लिए निकाली तिरंगा यात्रा

शिव आमंत्रण, आबू रोड। मेरी शान तिरंगा है, मेरी जान तिरंगा है... के नारों के साथ शुक्रवार को ब्रह्माकुमारीज के शांतिवन परिसर से तिरंगा यात्रा की शुरुआत की गई। मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस पर निकाली गई यात्रा में 108 बाइकर्स ने भाग लिया। बाइक पर लहराते तिरंगा झंडा और सड़क सुरक्षा का संदेश देते हुए यह मोटर बाइक रैली पालनपुर के लिए रवाना हुई। दादीजी ने सभी यात्रियों के लिए आशीर्वचन दिए। रैली में शामिल सभी 108 युवा बाइकर्स नशामुक्त और बालब्रह्मचारी हैं। यात्रा में शामिल बाइकर्स का पुष्पवर्षा कर स्वागत किया गया। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत उक्त यात्रा निकाली गई। यात्रा में खासकर ब्रह्माकुमारी बहनों ने भी उत्साह दिखाते हुए स्कूटर के साथ शामिल हुईं। आबू रोड-रेवदर विधायक जगसीराम कोली ने भी भाग लिया। मीडिया निदेशक बीके करुणा, कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके ऊषा, गायक हरीश मोयल, डॉ. सतीश गुप्ता, बीके रामप्रकाश, बीके जगदीश सहित बड़ी संख्या में युवा भाई-बहनें मौजूद रहे। संचालन वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके चंदा ने किया।

नई राहें

बीके पुष्पेन्द्र
संयुक्त संपादक, शिव आमंत्रण

'शक्ति' का आह्वान

नौ दिन ही नियम-संयम क्यों, जीवनभर क्यों नहीं?

शिव आमंत्रण। शक्ति, ऊर्जा, ताकत, बल। संपूर्ण ब्रह्मांड शक्ति (एनर्जी) से ही चल रहा है। जीवन को उच्च गुणवत्तापूर्ण जीने के लिए मुख्य पांच शक्तियों का संतुलन और समन्वय जरूरी है- शारीरिक शक्ति, मानसिक शक्ति, अर्थ शक्ति, आत्मिक शक्ति और परमात्म शक्ति। हम शारीरिक शक्ति और अर्थ शक्ति को पाने में इतने मशगूल हो गए हैं कि बाकी तीन शक्तियों को भुला बैठे हैं। कुछ लोग मानसिक शक्ति बढ़ाने का प्रयास करते हैं लेकिन जीवन के लिए जो सबसे महत्वपूर्ण है, जिसकी ऊपर नींव खड़ी है और आधार स्तंभ है- आत्मिक और परमात्म शक्ति, उसे बढ़ाने, अर्जित करने, संभालने की ओर हमारा ध्यान नहीं है। जब हमें आत्मिक शक्ति की पहचान हो जाती है, उसे जागृत करने की विधि जान लेते हैं तो परमात्म शक्ति वरदान के रूप में स्वतः मिल जाती है। आत्मिक शक्ति, मानसिक शक्ति और परमात्म शक्ति का एक-दूसरे से गहरा संबंध है। जब जीवन में ये तीनों पक्ष अपने मूल स्वरूप को प्राप्त करते हैं तो अर्थ शक्ति हमें गॉड गिफ्ट के रूप में प्राप्त हो जाती है।

दिव्यता का आह्वान-

हर वर्ष नौ दिन शक्ति की भक्ति में हम व्रत के साथ नियम-संयम और पूरे मनोभाव व संकल्प से जागरण, तप-आराधना-ध्यान करते हैं। क्योंकि विधि से ही सिद्धी मिलती है। यहां खुद से सवाल करना जरूरी है कि यदि नवरात्र में नौ दिन आदिशक्ति की आराधना में नियम-संयम से चल सकते हैं तो जीवनभर क्यों नहीं? नौ दिन में माता‌रानी खुश हो सकती हैं तो यदि जीवन ही उनके समान दिव्यता संपन्न बना लें तो क्या उनका स्वरूप नहीं बन सकते? हम दैवी की महिमा में जगराते, आराधना करते, उनके गुणों और शक्तियों की महिमा गाते लेकिन इस बारे में भी विचार किया है कि क्या हम उनके समान अपने जीवन में भी दैवीगुण धारण नहीं कर सकते? क्या हम भी उनकी तरह जीवन को शक्ति से परिपूर्ण नहीं बना सकते? क्या हमारा जीवन भी दैवी की तरह पवित्र नहीं हो सकता? क्या हम भी लेवता से देने वाले अर्थात् देव स्वरूप स्थिति को प्राप्त नहीं हो सकते? बचपन से मांगना हमारा संस्कार बन गया है। मुझे प्रेम चाहिए, स्नेह चाहिए, सम्मान चाहिए। इसकी जगह क्या हम देव स्वरूप स्थिति अर्थात् देने वाले, प्रेम स्वरूप अर्थात् प्रेम देने वाले, स्नेह स्वरूप अर्थात् स्नेह देने वाले। सम्मान देने वाले। जब जीवन में देने का भाव प्रकट होता है तो देवताई संस्कार अपने आप इमर्ज होने लगते हैं। क्योंकि देना ही लेना है। जब जीवन में दैवियों की तरह गुणवान और पवित्र बन जाता है तो शक्तियों का जागरण होने लगता है।

नवरात्रि ही क्यों? रात्रि अर्थात् अज्ञान, अंधकार, कालिमा, बुराइयां, आसुरीयता। नवरात्रि के साथ जुड़े 'नव' शब्द का अर्थ है नवीनता, नया, नई शुरुआत, शुद्ध-पवित्र। अंकों में इसे नौ भी कहते हैं। इसलिए नवरात्रि में नौ देवियों का गायन है। नवरात्रि अर्थात् अपने अंदर जो बुराइयां रूपी असुर और आसुरीयता घर कर गई है उसे नव संकल्प के साथ, नई शुरुआत के साथ जीवन में दिव्यता-पवित्रता का आह्वान करना। जगराता अर्थात् अपनी शक्तियों का जागरण करना। दैवियों को आदिशक्ति, शिवशक्ति भी कहा जाता है। कालांतर में शक्तियों ने भी योगबल से शिव से शक्ति प्राप्त की थी, इसलिए इन्हें शिवशक्ति भी कहते हैं। श्रीमद्भागवत गीता में लिखा है कि ब्रह्मा की रात्रि, ब्रह्मा का दिन। सतयुग और त्रेतायुग है ब्रह्मा का दिन और द्वापर, कलयुग है ब्रह्मा की रात है। जब संसार में अज्ञानता की रात्रि छा जाती है तो ऐसे समय पर ही परमात्मा भी संसार में शक्तियों की उत्पत्ति करते हैं, जिससे अंधकार, अज्ञानता समाप्त हो जाती है और मनुष्य जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैला सकता है।

पहले मनन करना है फिर वर्णन, मनन के बाद मगन अवस्था आती है

आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर

अमृत महोत्सव] देश में अलग-अलग क्षेत्रों से निकली तिरंगा यात्रा में लाखों भाई-बहनों ने लिया भाग

देशभर में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्रों पर फहराया तिरंगा

अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय आबू रोड में मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने ध्वजारोहण कर ली परेड की सलामी

छतरपुर, मप्र

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। धर्म और समाज से ऊपर राष्ट्र होता है। राष्ट्र के सम्मान में एक होना, एकता दिखाना और राष्ट्रीय उत्सव में बढ़-चढ़कर भाग लेना हर भारतीय धर्म और कर्म है। क्योंकि राष्ट्र से ही हमारी पहचान है। इस वर्ष देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। देशभर में गांवों से लेकर महानगरों में घर-घर तिरंगा फहराने के साथ तिरंगा यात्राएं निकालीं जा रही हैं। हर भारतीय राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति के रंग में रंगा है। ऐसे में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ने भी राष्ट्र धर्म निभाते हुए देशभर में स्थित सेवाकेंद्रों पर आन-बान-शान से तिरंगा झंडा फहराया गया। देशभर में स्वतंत्रता दिवस पर हुए आयोजनों की एक झलक...

करेली, मप्र

माउंट आबू

थाने, महाराष्ट्र

गोरखपुर, उप्र

आबू रोड

वाराणसी, उप्र

कादमा, झारखंड

भिलाई, छग

खंडवा, मप्र

लखनऊ, उप्र

सूचना के लिए संपर्क करें

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक शिव आमंत्रण समाचार पत्र एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।
वार्षिक मूल्य ▶ 150 रुपए, तीन वर्ष ▶ 450
आजीवन ▶ 3500 रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ▶ ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो ▶ 9414172596, 9413384884
Email ▶ shivamantran@bkivv.org

Published on 14th of each month & Issue- September- 2022

Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23. Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021 Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

■ प्रकाशक एवं मुद्रक: ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं दीबी कॉर्प लिमिटेड जयपुर से मुद्रित ■ संपादक: ब्र.कु. कोमल ■ संयुक्त संपादक: ब्र.कु. प्रशोन्ल ■ RNI No.: RAJHIN/2013/53539